राजकीय कन्या महाविद्यालय

सेक्टर–14, गुरुग्राम (हरियाणा)

रमणीक

सत्रः 2020–2021

EDITORIAL BOARD

Sitting Row : Left To Right - Smt- Yogita Bajaj (Editor, English Section) Dr. Ramesh Kumar Garg (Principal), Dr. Amitesh Boken (Editor - In - Chief, Editor - Hindi Section) Sh. Wazir Singh (Editor - Sanskrit Section)

Standing Row : Left To Right : Malti Sharma (Student Editor - English Section), Sonika Bhati (Student Editor - Hindi Section), Shivam (Student Editor - Sanskrit Section)

प्राचार्य संदेश

प्रिय विद्यार्थियो !

मनुष्य जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थिति गतिशीलता की होती है। गतिशीलता बिना प्रेरणा के नहीं हो सकती। प्रेरणा के होने के लिए एक निश्चित विचार–दिशा की आवश्यकता होती है। दिशाहीन गति विकास नहीं कर सकती। अतः गतिशीलता, उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए। आप सभी को अपने जीवन में विकासात्मक स्थितियों को प्राप्त करने के लिए एक निश्चित दिशा में गतिशील होना चाहिए। गतिशीलता के साथ अगर आप लय और संतुलन बनाकर चल सके तो उसका आनंद अनूठा हो जाएगा। इस संसार में कोई भी वस्तु जड़ नहीं है। दार्शनिकों ने तो जड़ कही जाने वाली वस्तुओं में भी गति का सौंदर्य देखा है। यह गतिशीलता भाव जगत की और भौतिक जगत की–दोनों ही प्रकार की हो सकती हैं। भौतिक जगत की गति भौतिक जीवन की उन्नति के लिए तथा भाव जगत की गति मानसिक उन्नति के लिए आवश्यक होती है

पूरे विश्व में इस समय कोरोना महामारी ने मानवता के लिए गंभीर संकट उपस्थित कर दिया है। मानों सभी रूक गई हो। जो मनुष्य नए–नए कार्यों से प्रकृति को और संसार को चमत्कृत कर रहा था; वह आज घर की चारदीवारी में बंद है। अपना अस्तित्व बचाने के लिए उसे अनेक प्रकार के समझौते करते पड़ रहें हैं। उसकी गति धीमी जरूर पड़ी है पर बंद नहीं हुई है। आपको भी कोरोना महामारी के इस भयंकर समय में अपने अस्तित्व

की रक्षा के लिए नियमपूर्वक अध्ययन करते हुए. गतिशील रहने की आवश्यकता है। हितोपदेश में कहा गया है– अनभ्यासे विशं विद्या अजीर्णे भोजनं विषम्। अर्थात् अपच्य भोजन जहर का काम करता है और अभ्यास का अभाव विद्या के लिए जहर बन जाता है। जीवन में घटित होने वाली छोटी–छोटी घटनाओं को नजर अंदाज ना करें। महान शिक्षाओं की प्राप्ति के लिए यह जरूरी नहीं कि आप महान घटनाओं के साक्षी बने। छोटे कार्यों को भी असरदार तरीके से पूरा किये जाने पर यश की प्राप्ति होती है। कहा भी गया है ——

- **Not to undertake anything (lightly) is the first mark of wisdom; the second mark is to accomplish what has been undertaken.**

अर्थात् ज्ञान की पहली निशानी यह है कि किसी भी वस्तु और कार्य को हलके ढंग से नहीं लेना तथा दूसरी निशानी यह है कि जो कार्य लिया गया है उसे सही तरीके से पूरा करना।

अंत में उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लिया और अपना विशेष स्थान अर्जित किया। आप सभी विद्यार्थियों की गतिशीलता इस महाविद्यालय को निरंतर उन्नति की तरफ ले जा रही है। रमणीक के इस अंक के सभी रचनाकारों को बधाई व निरंतर लेखन करते रहने के लिए शुभकामनाएं।

डॉ० रमेश कुमार गर्ग
प्राचार्य
H.E.S.-I
राजकीय कन्या महाविद्यालय
सेक्टर–14, गुरुग्राम

प्रधान संपादक की कलम से

सुप्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक नीत्शे ने मानव की पाशविक वृत्तियों के परिष्कार के बाद उसके सुपरमैन हो जाने की कल्पना की थी। बहुत कुछ ऐसी ही कल्पना महर्षि अरविंद घोष के दर्शन में भी हमें मिलती है। उन्होंने भी मानवता का विकास मानव के अतिमानव हो जाने में ही माना है। पूरे विश्व में जितने भी सामाजिक और साहित्यिक आंदोलन हुए हैं, वे सभी किसी न किसी रूप में हमारी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रिक्तियों को भरने के प्रयास हैं जिन्हें हम अभी तक भर नहीं सके हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान सैमुअल फिलिप्स हंटिंगटन ने 1993 में विश्व सभ्यताओं में संघर्ष की पुनः संभावना को दर्शाते हुए संस्कृतियों का संघर्ष नामक पुस्तक लिखी थी। उन्होंने माना कि विश्व में प्रत्यक्ष रूप में अब युद्ध नहीं होंगे, बल्कि ये युद्ध सांस्कृतिक आधारों पर लड़े जाएंगे।

साहित्य का लक्ष्य अंततः मनुष्य को एक विश्व मानवता की ओर ले जाना है। आज पूरे विश्व में संस्कृतियों के संघर्ष की भयंकर अनुगूंज सुनाई पड़ रही है। सवाल यह उठता है कि साहित्य इस सांस्कृतिक संघर्ष को एक सहमति के बिंदु पर ला पाएगा या नहीं? मानसिक स्तर पर लड़े जा रहे इन संघर्षों का प्रस्थान बिंदु क्या है? सुपरमैन या अतिमानव की कल्पना साकार होगी या संस्कृतियों का प्रचंड संघर्ष होकर रहेगा? साहित्य और साहित्यकार को इस स्थिति का मूल्यांकन करके मानवता को एक राह पर इकट्ठा और एक साथ चलने की संभावनाओं को देखना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति की संस्कृति – गौरव की भावना स्वयं की जातीय गौरव की भावना से जुड़ी हुई मालूम हो रही है। इसीलिए जातीय गौरव की अभिव्यक्तियों से पूरा सूचना तंत्र अटा पड़ा है। अपनी ही जाति और संस्कृति की गौरव गाथाओं का माध्यम वे घटनाएं और महान पुरुष भी बन गए हैं जिनसे एक संस्कृति के लोगों का कभी कोई संबंध नहीं था। साहित्य का उद्देश्य एक सामूहिक मानव संस्कृति का निर्माण करना भी है। यह निश्चित है कि संस्कृति संघर्ष की इन स्थितियों का परिणाम सहजता से और एकाएक निकलने वाला नहीं है। एक लंबा समय इस संघर्ष का साक्षी बनेगा। साहित्य और साहित्यकारों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे इस संघर्ष से मनुष्य को बचाकर अंततः विश्व मानव की संस्कृति को खड़ा कर पाँए। पेड़ जब बड़ा होता है तो उसके तने के साथ कुछ अनावश्यक टहनियां भी फलती फूलती हैं। सांस्कृतिक संघर्ष के इस समय में कुछ साहित्यकार स्वंय की

संस्कृतियों के पक्ष में खड़े है और कुछ विरोध में खड़े है। वट वृक्ष की टहनियों कि तरह इनकी भी जड़ें उग आई हैं। ये जड़ें तने के नीचे जाकर, मिट्टी में धँसाकर भूगर्भीय इतिहास को खंगालने में लगी हैं। लगता है पेड़ की मूल जड़ उखड़कर रहेगी। ऐसे साहित्यकारो ने कील और हथौड़ी की जगह स्वंय की नाक और सिर से प्रयास करने शुरू कर दिये हैं। सिर की चोट से नाक घसेगी तो जरूर, बेशक खून खुद का ही बह जाए।

भूमंडलीकरण के इस दौर में विश्वग्राम संस्कृति की बात भी की जा रही है। हमें समग्र रूप से पूरे विश्व को और मानव को एक करके देखना होगा। सामवेद में कहा गया है कि यह संसार देवताओं का लिखा हुआ काव्य है। जब सारा संसार ही एक काव्य है तो इसकी संस्कृति भी एक ही होनी चाहिए– देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति। हमें देवों के इस एकरूप काव्य रूपी संसार को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

ड़ॉ० अमितेश बोकन
सहायक प्रोफेसर
(हिंदी विभाग)

कला ही यह सब कर सकती है। कला ही मनुष्य को विखंडित अवस्था से ऊपर उठाकर पूर्णता की अवस्था में, एकीकृत अस्तित्व की अवस्था में, ला सकती है। कला मनुष्य को यथार्थ समझने में समर्थ बनाती है, और न केवल यथार्थ को झेलने में उसकी सहायता करती है, बल्कि यथार्थ को अधिक मानवीय तथा मानवता के लिए अधिक उपयुक्त बनाने के उसके दृढ़ निश्चय को भी बढ़ाती है। कला स्वयं एक सामाजिक यथार्थ है। समाज के लिए कलाकार सबसे बड़ा जादूगर है, और समाज को इस सबसे बड़े जादूगर की जरूरत होती है।

अंर्स्ट फिशर

संपादक–मंडल

प्रधान संपादक	: डॉ० अमितेश बोकन सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिंदी – अनुभाग – संपादक	: डॉ० अमितेश बोकन सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
छात्र – संपादिका	: सोनिका भाटी, बी० ए०, तृतीय वर्ष हिन्दी ऑनर्स
अंग्रेजी–अनुभाग–संपादिका	: योगिता बजाज सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
छात्र–संपादिका वर्ष,	: मालती शर्मा, एम०.ए०.–द्वितीय (अंग्रेजी)
संस्कृत–अनुभाग–संपादक	: वजीर सिंह सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

हिंदी–अनुभाग – रमणीक (2020–2021)

संपादक – डॉ. अमितेश बोकन

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

छात्र संपादिका – सोनिका भाटी

बी.ए. हिंदी ऑनर्स (III)

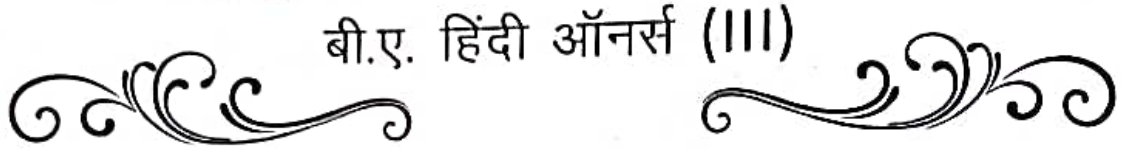

1.	नारी	कंचन, बी.ए.पास कोर्स, प्रथम वर्ष
2.	पुस्तकों की आपबीती	रिया, बी.एससी. होम सांइस
3.	मनभावन सावन	प्रिया रोहल्ला, बी.ए. हिंदी ऑनर्स
4.	मैं मजदूर कह रहा हूँ	प्रिया, बी.ए. पास कोर्स
5.	प्रिय पेड़	प्रिया, बी.ए. पास कोर्स
6.	वो पिता होता है!	तृप्ति, बी. कॉम पास कोर्स
7.	क्यों है भारत इतना महान?	प्रिया, बी.ए. अंग्रेजी ऑनर्स
8.	सब बराबर	तान्या दुबे, बी. एससी.
9.	हम है तो संसार है	सोनिका भाटी, बी.ए. हिंदी ऑनर्स
10.	बबूल का पेड़	सोनिका भाटी, बी.ए. हिंदी ऑनर्स,
11.	माँ	आशु विमल, बी.ए. हिंदी ऑनर्स
12.	बेटियाँ	स्नेह कुमारी, बी.एससी.
13.	मजहबी सियासत	रेनु राघव, बी.ए. राजनीतिशास्त्र ऑनर्स
14.	आक्रोश एक हीन भावना	साक्षी बोकन, बी.ए. राजनीतिशास्त्र ऑनर्स
15.	क्योंकि एक लड़की हूँ मैं	अंतिमा साहू, बी.एससी. मेडीकल,
16.	इजाजत	अंतिमा साहू, बी.एससी. मेडीकल
17.	मेरे अध्यापक	मनीषा, बी. कॉम,
18.	आज का मानव	डॉ पुष्पा अंतिल, एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
19.	रंग	शीला यादव, सहायक प्रोफेसर, (भूगोल विभाग)
20.	समय एक बच्चा है	डॉ. अमितेश बोकन, सहायक प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
21.	माँ	डॉ. लोकेश शर्मा, सहायक प्रोफेसर (संगीत विभाग)
22.	बुढ़ापा	शीतल धीमान, बी.एससी मेडीकल,

नारी

नारी जन्म से अबला है,
मर्दों से सहारा माँगती है।
दुनिया को जन्म देती है,
अपने लिए गुजारा माँगती है।

पिता, भाई और इज्जत के रखवाले से
कुछ प्यार उधार माँगती है।
कभी अपनी कोख के जाए से,
कुछ प्यार उधार माँगती है।।

बदकिस्मत अबला नारी की,
खामोश कहानी चलती है।
हर युग के बदलते साये में,
इसकी तकदीर बदलती है।।

नारी जन्म से अबला है,
मर्दों से सहारा माँगती है।
दुनिया को जन्म देती है।
पर अपने लिए गुजारा माँगती है।

कंचन
बी.ए.–पास कोर्स.
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक –120034002181

दुनिया का रोमानिकरण निहायत जरूरी है। इस प्रकार मौलिक अर्थ फिर से पाया जा सकता है... सामान्य को उदात्त अर्थ प्रदान करके, साधारण को रहस्यमयी प्रतीति प्रदान करके, ज्ञान को अज्ञात की महिमा प्रदान करके, ससीम को असीम का रूप प्रदान करके..... कल्पनालोक में यदि हम स्वयं को नहीं देख पाते हैं, तो इसका कारण केवल हमारे शारीरिक अंगों की तथा बोधक्षमता की कमजोरी है।

नोवालिस

पुस्तकों की आपबीती

हूँ तो मैं तुम्हारी प्रिय मित्र जिन्दगी में,

लेकिन क्या मानते हो तुम उसे सच में ?

रखते हो तुम मुझे अपने पास

दूसरों को दिखाने के लिए।

लेकिन क्या समझते हो तुम मेरी अहमियत जिन्दगी में?

मेरे अंदर तो है बहुत कुछ

पर छूट जाता है

एक ही झटके में सब कुछ।

जब कोई फेंक देता है मुझे इधर–उधर

अनुपयोगी समझे जाने पर बिक जाती हूँ

कबाड़ी के आँगन में

लेकिन क्या उस समय आँगन तुम्हारा महकता होगा?

हूँ तो मैं तुम्हारी प्रिय मित्र जिन्दगी में

लेकिन क्या करूँ मैं, तुम मानते नहीं मुझे दोस्त परेशानी में।

रिया
बी.एससी. (होम साइंस)
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक 201260350022

कविता एक तरह का उल्टा स्वप्न है। जहाँ स्वप्न में वास्तविक भावनाएँ अंशतः दबी रहती हैं और चेतना में मिश्रित बिंब उभरते हैं, वहाँ कविता में संबंधित बिंब अंशतः दबे रहते हैं और मिश्रित भावनाएँ ही भाव– योजना के रूप में चेतना में उपस्थित रहती हैं।

क्रिस्टोफर कॉडवेल

मनभावन सावन

झम–झम–झम–झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम–छम–छम गिरती बूँदे तरूओं से छन के,
चम–चम बिजली चमक रहीं रे उर में घन के,
थम–थम दिन के तम में सपने जगत के।

पंखो–से रे! फैले ताड़ों के दल,
लंबी – लंबी उँगलियाँ है, चौड़े करतल
तड़ – तड़ पड़ती धार वारि की उन पर चंचल,
टप – टप झरती कर मुख से जल बूँदे झलमल।

नच रहे पागल हो ताली दे – दे चल – दल,
झूम – झूम सिर नीम हिलाती सुख से विह्वल,
हरसिंगार झरते बेला – कली बढ़ती प्रतिपल,
हँसमुख हरियाली में खगकुल गाते मंगल।

दादुर टर–टर करते झिल्ली बजती झन–झन,
'म्याँव– म्याँव' रे मोर 'पीउ–पीउ चातक के गण,
उड़ते सोन बलाक, आर्द्र मुख से कर क्रंदन,
घुमड़ – घुमड़ घिर मेघ गगन में भरते गर्जन।

रिमझिम – रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते, छूते वे भीतर अंतर,
धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर,
रज के कण–कण में तृण–तृण की पुलकावलि भर।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,।।

प्रिया रोहिल्ला
बी.ए. हिंदी ऑनर्स.
द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 3026120001

मैं मजदूर कह रहा हूँ

मैं मजदूर कह रहा हूँ

कि मजदूर था और अब मजबूर बन गया हूँ

बेकसूर था और अब गुनेहागार बन गया हूँ।

किस उम्मीद से घर और गाँव छोडा था ?

किस चाह से शहर से रिश्ता जोड़ा था?

लेकिन टूट गया हूँ मैं अब

मजदूर था और अब मजबूर बन गया हूँ

बेकसूर था पर अब गुनेहगार बन गया हूँ।

ये कैसी मुसीबत आ गई मुझ पर

पेट में रोटी नहीं और नही है छत सर पर

अब हार गया हूँ

लाचार हो गया हूँ

मजदूर था और अब मजबूर बन गया हूँ

बेकसूर था पर अब गुनेहगार बन गया हूँ।

प्रिया
बी. ए. पास कोर्स.
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक 120034002286

अगर कला को जबर्दस्ती सरकारी प्रतिष्ठा दी जाएगी और उसे अनुर्वर साधारणता के लिए अभिशप्त किया जाएगा तो यह चीज कला के लिए प्राणघाती सिद्ध होगी।

कोर्बे
(प्रसिद्ध चित्रकार)

प्रिय पेड

क्या कहूँ तुमको
बस माफ कर दो हमको।
काट–काट कर तुम्हारी गिनती कम कर दी
हम इंसानो ने तो हद कर दी।
तुम बोल नहीं सकते
अपने दर्द को किसी के सामने खोल नही सकते
अगर बोल सकते
अपने दर्द को बताते
अपने महत्त्व को समझाते
हमारी गलती पर डाँट लगाते।
फिर हम तुम्हें काटने के लिए कभी न हाथ बढ़ाते
पर अभी भी तुम्हारे महत्त्व को मनुष्य ने नहीं समझा
तुम्हें काँटने के लिए तत्पर रहता।
अगर लकड़ी, फल, फूल और औषधि जरूरत है तुम्हारी
तो पेड़ काट के दूसरा न लगाना ये कौन सी है समझदारी?
मत भूलो ऑक्सीजन से चलती है जिंदगी हमारी
पेड़ की वजह से ही ठीक होती है न जाने कितनी बीमारी
ओ पेड़, क्या कहें तुमको
बस माफ कर दो हमको।

प्रिया
बी. ए. पास कोर्स.
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – 120034002286

स्वच्छंदतावाद विरोध का आंदोलन था। यह पूँजीवादी जगत के विरूद्ध, 'टूटे हुए भ्रमों' की दुनिया के विरूद्ध, व्यापार और मुनाफे के नीरस गद्य के विरूद्ध किए जानेवाले आवेगपूर्ण मगर अंतर्विरोधी प्रतिवाद का आंदोलन था।

अंर्स्ट फिशर

वो पिता होता है!

वो पिता ही होता है,
जो अपने बच्चों को अच्छे,
विद्यालय में पढ़ाने के लिए,
दौड़ भाग करता है.....
उधार लाकर डोनेशन भरता है,
जरूरत पड़ी तो किसी के भी
हाथ पैर भी पड़ता है,
वो पिता होता है।।

कॉलेज में साथ–साथ घूमता है।
बच्चे के रहने के
लिए होस्टल ढूँढता है....
खुद फटे कपड़े पहनता है
और बच्चे के लिए नई जीन्स
टी–शर्ट लाता है।
वो पिता होता है।।

खुद खटारा फोन बरतता है पर,
बच्चे के लिए स्मार्ट फोन लाता है,
बच्चे की एक आवाज सुनने के लिए,
उसके फोन में पैसा भरता है।

वो पिता होता है।।
बच्चे के प्रेम विवाह के निर्णय पर,
वो नाराज होता है और गुस्से
में कहता है "सब ठीक से देख लिया है ना"
"आपको कुछ समझता नहीं आता है।"
यह सुनकर बहुत रोता है।

वो पिता होता है।।
बेटी की विदाई पर दिल की
गहराई से रोता है,
मेरी बेटी का ख्याल रखना
हाथ जोड़ कर कहता है।
वो पिता होता है।।

तृप्ति
बी. कॉम. पास कोर्स.
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक 120034003365

क्यों है भारत इतना महान ?

कुछ यूं हुई इस जिक्र की शुरूआत
बातों –बातों में निकली भारत की बात
एक सवाल सभा में उठ खड़ा हुआ
कि क्यों है भारत इतना महान?
क्या है इसमें ऐसा जो हर कोई गाता बस इसी के गुणगान
उस असीमित जवाब को कुछ सीमित शब्दों में इस प्रकार ढ़ाला मैनें.....
कि
भारत वो है जो जज्बात बन धड़कता है हर हिन्दुस्तानी के सीने में
एक–एक कोने में
कृष्ण की मुरली यहाँ राधा की नाचती पायल हैं
आदर्श यहाँ है राम की सीता–सा पवित्र हर मन है
चटपटेपन का जायका यहाँ के मसालों ने दुनिया को दिया है।
खेतों से अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में हमने नाम किया है
शून्य की खोज से लेकर हर शिखर को हमने फतेह किया है
कला, साहित्य, विज्ञान का ज्ञान संसार को हमने दिया है
मन को शांति देने वाले बुद्ध के यहाँ विचार है
रंगों का यह देश है जहाँ हर दिन एक त्यौहार है।
और जमीन–ए–हिंद पर तो वीरों के इतने हैं बलिदान
किस किसको करूँ मैं बयां लाखों है नाम

कुछ यूं हुई इस जिक्र की शुरूआत
बातों –बातों में निकली भारत की बात
एक सवाल सभा में उठ खड़ा हुआ
कि क्यों है भारत इतना महान?
क्या है इसमें ऐसा जो हर कोई गाता बस इसी के गुणगान
उस असीमित जवाब को कुछ सीमित शब्दों में इस प्रकार ढ़ाला मैनें.....
कि
भारत वो है जो जज्बात बन धड़कता है हर हिन्दुस्तानी के सीने में
एक–एक कोने में
कृष्ण की मुरली यहाँ राधा की नाचती पायल हैं
आदर्श यहाँ है राम की सीता–सा पवित्र हर मन है
चटपटेपन का जायका यहाँ के मसालों ने दुनिया को दिया है।
खेतों से अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में हमने नाम किया है

प्रिया
बी.ए. अंग्रेजी ऑनर्स.
द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 3025520011

"It matters not what someone is born, but what they grow to be."

-J.K. Rowling

सब बराबर

* जो अहंकार तू कर के उछल रहा,
  वो रिश्तों में भौचाल बराबर
* अरे! माफ करो, क्यों बदला लेना,
  बदला ही है जो काल बराबर
* ये मोह माया सब चक्कर है,
  ये चक्कर है जंजाल बराबर
* ये रूप – कुरूप छलावा है बस,
  मरने के बाद हर हाल बराबर
* हिन्दू – मुस्लिम सब धर्म की बातें,
  उस रब के लिए हर लाल बराबर
* जो दिन फुरसत में कटता है
  वो लगता है साल बराबर
* सबको मंदिर – मस्जिद में जाते देखा,
  लगता है हर दरबार बराबर
* जो अंहकार तू कर के उछल रहा,
  वो रिश्तों में भौचाल बराबर

तान्या दूबे
बी. एससी.
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक –120034015228

"Great literature is simply language charged with meaning to the utmost possible degree."

-Ezra Pound

हम है तो संसार है

दुनिया रोज बनती है
क्यों ?
क्योंकि हर दिन
हर जिंदगी
नया मोड़ लेती है
जीने की चाह
मौत में भी
साँस भर देती है
इस जिंदगी को जीने की
चाह रखो
भगवान भी तुम्हें
उठाने की चाह छोड़ देंगे
इच्छा इतनी हो
जिससे जी सको
साँस इतनी हो
जिससे मर न सको
प्यार इतना हो
नफरत न कर सको
बड़ा बनने की चाह
तो हर कोई करता
तुम छोटी जिदंगी
जी के तो देखो
जिंदगी का क्या है
कभी इस तरफ तो
कभी उस तरफ मुड़ती है
साँस है तो आस है
प्यास है तो भूख है
प्यार है तो तकरार है
जिंदगी है तो मौत है
हम है तो संसार है

सोनिका भाटी
बी.ए. हिंदी ऑनर्स
तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक –2144820044

बबूल का पेड़

जिसकी छाया नहीं भाति किसी को भी
जिसकी सुन्दरता नहीं लुभाती किसी को भी
जिसका फल स्वादिष्ट नहीं है
जिसका फूल सुंगधित नहीं है
जिसकी घर में शोभा नहीं है
वो वृक्ष है बबूल।
छाँव उसकी घनी न सही
पर योगदान उसका पूरा सही
सुन्दरता चाहे उसकी न लुभाती
पर पर्यावरण को स्वच्छ बनाती
उसके काँटो का चाहे नहीं मोल
पर उसकी छाल है अनमोल
जो सबकी दवा है बन जाती
जिसका तना है मजबूत
वो वृक्ष है बबूल
जिसका अंग–अंग है उपयोगी
जिसकी गोंद बनी है
घर–घर औषधि
क्या वो वृक्ष नहीं है उपयोगी?
जो सूखे मौसम में भी नहीं डगमगाया
जिसने बिना परवाह के हर मौसम को है झेला
जिसने अपने आपकों
पौधे से वृक्ष बनाया
जिसने अपने अनवरत संघर्ष से
दूसरों का होंसला बढ़ाया
वो वृक्ष बबूल है कहलाया।
जिसने सब कुछ दिया
बदले में कुछ न लिया
वो वृक्ष है बबूल
जो आज सीधा दिल के रास्ते से होकर
पन्नों पर उतरा है
वो वृक्ष है बबूल।

सोनिका भाटी
बी.ए. हिंदी ऑनर्स
तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक –2144820044

माँ

एक माँ ही होती है जो हँसकर हर सवाल का जवाब देती है,
और हम उसके एक सवाल पर भी चिढ़ इतना जाते है।
छुडाना चाहते हैं अपना पल्ला, उसके चिंता भरे सवालों से,
मगर बस एक माँ ही होती है,
जो हर मोड़ पर , हर फैसले में हमारा साथ देती है,
जब कभी भी हम बिखर जाते हैं वह
समेट लेती है अपनी आँचल में,
कड़क धूप में छाँव की तरह सूकून देती है।
जानना चाहती है वो दोस्त कितने है मेरे,
कहाँ रहते हैं, क्या करते हैं वो ?
ताकी जब कभी भी लेट हो जाऊ मैं
तो उनसे पूछ सके, जान सके
कही मैं किसी मुश्किल में तो नहीं,
बस इतना ही चाहती है वो
कि मैं जहाँ भी रहूँ कोई तकलीफ न हो मुझे।
और ये भी चाहती है वो
कि रहूँ हमेशा मैं उसकी आँखों के सामने।

मगर मेरा दिल तो चाहता है कही उड़ जाना,
खुलकर जीना न कोई रोक, न कोई टोक,
इसलिए होती है हर रोज तकरार हम दोनों के बीच,
फिर भी वो आती है खाना लेकर मेरे पास ,
कहने कि "बिना खाए नहीं सोते, अच्छा नहीं होता"
जब कभी भी तबियत बिगड़ती है मेरी,
वो करती है सारे जतन ताकि ठीक रहू मैं,
डाक्टर की दवाई के अलावा भी
कितने तरीके अपनाती है,
लगाके काला टीका, बांधकर काला धागा,
वो बचा लेती है हमें अपने तरीके से,

हाँ वो थोड़ी अंधविश्वासी होती है,
मगर माँ तो माँ होती है।

आशु विमल
बी. ए. हिंदी ऑनर्स,
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक –120034064013

बेटियाँ

ईश्वर का वरदान होती है बेटियाँ,

माँ की जान है बेटे, तो पिता की अरमान है बेटियाँ।
एक कुल की लाज बचाते हैं बेटे, तो दो कुल की लाज बचाती है बेटियाँ।।

ईश्वर का वरदान होती हैं बेटियाँ।

माँ–बाप पर आए दुख की बारिश तो छाता बन जाती है बेटियाँ।
दुखी हो तो छुपकर रो लेती है, पर पूरे परिवार को हँसाती है बेटियाँ।।

ईश्वर का वरदान होती हैं बेटियाँ।

घर की आन है बेटे, तो घर की शान है बेटियाँ।
होती है फूल सी नाजुक , पर परिवार को मुसीबत में देख
पूरी दुनिया से लड़ जाती है बेटियाँ।।

ईश्वर का वरदान होती हैं बेटियाँ।

आस लगाते हैं बेटे से, पूरी कर जाती है बेटियाँ।
आजादी मिलती है बेटों को, उड़ जाती है बेटियाँ।।

ईश्वर का वरदान होती हैं बेटियाँ।

फल है बेटे तो फूल है बेटियाँ।
वंश है बेटे, तो अंश है बेटियाँ।।

ईश्वर का वरदान होती है बेटियाँ,

माँ की जान है बेटे, तो पिता की अरमान है बेटियाँ।
एक कुल की लाज बचाते हैं बेटे, तो दो कुल की लाज बचाती है बेटियाँ।।

ईश्वर का वरदान होती हैं बेटियाँ।

माँ–बाप पर आए दुख की बारिश तो छाता बन जाती है बेटियाँ।
दुखी हो तो छुपकर रो लेती है, पर पूरे परिवार को हँसाती है बेटियाँ।।

ईश्वर का वरदान होती हैं बेटियाँ।

घर की आन है बेटे, तो घर की शान है बेटियाँ।
होती है फूल सी नाजुक , पर परिवार को मुसीबत में देख
पूरी दुनिया से लड़ जाती है बेटियाँ।।

ईश्वर का वरदान होती हैं बेटियाँ।

आस लगाते हैं बेटे से, पूरी कर जाती है बेटियाँ।
आजादी मिलती है बेटों को, उड़ जाती है बेटियाँ।।

स्नेह कुमारी
बी. एससी.
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – 120034015195

मजहबी सियासत

काश जन्नत जैसा खुशनुमा सारा ये जहान होता
न हिंदू न मुसलमान कोई, बस हर कोई यहाँ इंसान होता।।
यूँ धर्म के नाम पर, जो न कहीं बँटवारे होते
सोचो जरा.....
ये आपसी रिश्ते कितने प्यारें होते।
कहीं तो अपनी आपसी नफरतें मिटाओ कभी
वो तुम्हें मंदिर तक छोडे,
तुम उसे दरगाह छोड़ आओ कभी।।
एक समय तो ऐसा भी था
जब हिन्दू–मुस्लिम साथ गाते थे,
साथ ही रमजान, होली–दीवाली,
और साथ ही ईद मनाते थे।।
वो एक ही तो हस्ती है, जिसने
सारा जहान बनाया है।
फर्क बस इतना है कि कोई उसे
अल्लाह तो कोई भगवान कहकर
भरमाया है।।
गौर तो करो जरा.....
कहाँ से तुम चले थे, और अब कहाँ जा रहे हो
तुम धर्म के नाम पर बस इंसानियत को खा रहे हो।
चाँद से कुछ सीखो, जब वो आसमान में उतर कर आता है
कोई उसे देख करवाचौथ, तो कोई ईद मनाता है।।
क्यों सियासी झगड़ों में,
अपने अंतस को भी हैवान बना बैठे
न हिंदू बने न मुसलमान,
बेवजह अपने भीतर का इंसान गवा बैठे।

रेनु राघव
बी. ए. राजनीतिषास्त्र ऑनर्स,
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – 120034066060

आक्रोश – एक हीन भावना

क्रोध की यह ज्वाला तुझे स्वयं भस्म कर जाएगी
तेरे अंदर के इंसान को न दूजा मौका दे पाएगी।।
इस अग्नि का प्रचंड तेज तेरे कर्मों को बिगाडेगा
फल स्वरूप प्राप्त लाभ को भी उजाड़ेगा।।
पाप– पुण्य की यह बेल तुझे हर राह पे घुमाएँगी
तेरे पथ पर चलने का लक्ष्य ये मंद–मंद उलझायेगी।।
द्वेष, ईर्ष्या या जलन कह लो ये मंत्र है तबाही के
जो एक संत को भी अंत की ओर ले जाते हैं।।
फिर भी ना जाने क्यों लोगों को ये ही भाते है।।
इस कलयुग की ये उलझने सबको
कर देगी सोचने पर मजबूर
और इसका कोई हल मिले तो ऐ मेरे दोस्त!
हमें बताइएगा जरूर।।

साक्षी बोकन
बी.ए. राजनीतिषास्त्र ऑनर्स,
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – 120034066034

क्योंकि एक लड़की हूँ मैं

बहुत सोचा चित में खोजा
उतार दूँ ये अनपढ़ बोझा
मै पढ़ूंगी मैं बढ़ूंगी
जो ना किया वो अब करूंगी
अंत उस मगर की हूँ मैं
क्योंकि एक लड़की हूँ मैं

'कल्पना' हूँ 'मैरी' हूँ मैं,
दोस्तों की दोस्त, दुश्मनो की बैरी हूँ मैं
हार उस डर की हूँ मैं
क्योंकि एक लड़की हूँ मैं

शांत हूँ सुशील हूँ मैं
पंतग की वो ढील हूँ मैं
बस पापियों से भड़की हूँ मैं
क्योंकि एक लड़की हूँ मैं

जन्मी हूँ, जननी हूँ मैं
बाँटने पर बँटती हूँ मैं
गृहस्थी में लक्ष्मी हूँ मैं
रिश्तों में बड़की हूँ मैं
आशाओं की खिड़की हूँ मैं
क्योंकि एक लड़की हूँ मैं।

अंतिमा साहू
बी.एससी. मेडीकल,
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – 131

इजाजत

इजाजत नहीं है तुम्हें
खुद को मिटाने की
तुम भी किरदार हो एक
कोशिश करते रहो उसे
निभाने की

उलझी है ये दुनिया जिसमें
चेष्टा ना करना उसमें
ख़ुद को उलझाने की
इज़ाफा तो हुआ है
सोच की समंदर में
तो क्या जरूरत है
उसे गहराई बताने की।

दूसरों में अपना नाम मत ढूंढो
कोशिश करो अपनी अलग
पहचान बनाने की
सौ रास्ते रखोगे तो
भटकोगे जरूर
एक राह, सच्ची लगन रखो
मुकाम पाने की
जीवन के इस नाटक में
पात्र तो कई है
कुछ ऐसा करो, जग
कोशिश भी ना कर सके
तुम्हे भुलाने की
इजाजत नही है तुम्हे
खुद को मिटाने की।।

अंतिमा साहू
बी.एससी, मेडीकल,
प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – 131

मेरे अध्यापक

मेरे अध्यापक इतने अच्छे
क्या कहूँ मैं इनके बारे में,
क्या कहूँ मैं इनके बारे में,
जहाँ रखूँ कदम वहाँ अंधेरा नहीं''
ये रखे मुझे उजियारे में,
है इनके जैसा कोई नहीं
माँ– बाप समान ये प्यारे हैं,
हमारी गलती मगर इनकी मुआफी
हम इन्ही के तो दुलारे हैं।
डाँटना, फटकारना है सजा नहीं, मोहब्बत है इनकी
क्यूँ दुनिया में ये इतने न्यारे हैं।
अब, लफ्ज नहीं क्या करूँ तारीफ
अब, लफ्ज नहीं क्या करूँ तारीफ
मेरे अध्यापक अच्छे और सच्चे दुनिया में
जो सारे हैं
माफ करना ए – खुदा,
इस जहाँन में
मुझे ये तुमसे भी प्यारे हैं
मुझे ये तुमसे भी प्यारे हैं।।

मनीषा
बी. कॉम,
द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 2946820067

आज का मानव

आज का मानव
लगभग दानव
हिंसक, क्रूर, लोभी
असत्यवादी और ढोंगी
छल ही जिसका धर्म
क्या जाने वह जीवन–मर्म
नाते– रिश्ते जिसके लिए बोझ
स्वार्थ में लिप्त है वह रोज
आए दिन अखबार की सुर्खियों में हम पाते
किस तरह संपति हेतु कुचले जाते हैं नाते
नहीं सुन पाते जो सगे भाई की चीख
क्या देंगे वो आने वाली पीढ़ी को सीख
परिवार का टूटन समाज का बिखराव
मूल्यों का विघटन और जीवन सत्यों का घाव
मानव–मानसिकता है आज घायल
जिसका था कभी समस्त ब्रह्मांड कायल
प्राणियों में श्रेष्ठ होकर भी जो आज नीचे
चला जा रहा है मानव लोचन मीचे
परिणाम की न सुध, अन्त की न परवाह
जिसके मन में केवल आगे बढ़ने की चाह
परम पिता परमात्मा से मेरी विनती है यही
मानव को दिखाए राह है जो सही।

डॉ पुष्पा अंतिल
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

रंग

होके मायूस यूं ना बैठ जाइए
रंगो भरी इस दुनियां से
एक रंग को तो उठाइए,,
आँखे मूंद लीजिए जरा जनाब
इस मन को थोड़ी रोक तो लगाइए
बिखरे इन रंगों में से
किसी एक से तो रूबरू हो जाइए
रंगो भरी .....
बंद आँखों के इस काले रंग
से ना घबराइए,,
सांसे तो गहरी कीजिए जनाब
इस अंधेरे का आनंद तो उठाइए,
अरूण का उदय हुआ, मंजुल छटा बिखेर रहा
इस पीले नारंगी रंग को जरा
अन्तर तक तो ले जाइए
रंगो भरी .....
अंबर से जरा नील अंबर
का अवलोकन तो कर लो
बिन रंग की इस पवन को
जरा सांसो में तो भर लो
हर रंग में एक बात है हर रंग के
अलग जज्बात हैं
सारे रंगो को मुट्ठी में भरने की
कश्मकश में ना लग जाइए ?
रंगो भरी .....

शीला यादव
सहायक प्रोफेसर
भूगोल विभाग

आज का मानव

आज का मानव
लगभग दानव
हिंसक, क्रूर, लोभी
असत्यवादी और ढोंगी
छल ही जिसका धर्म
क्या जाने वह जीवन–मर्म
नाते– रिश्ते जिसके लिए बोझ
स्वार्थ में लिप्त है वह रोज
आए दिन अखबार की सुर्खियों में हम पाते
किस तरह संपति हेतु कुचले जाते हैं नाते
नहीं सुन पाते जो सगे भाई की चीख
क्या देंगे वो आने वाली पीढ़ी को सीख
परिवार का टूटन समाज का बिखराव
मूल्यों का विघटन और जीवन सत्यों का घाव
मानव–मानसिकता है आज घायल
जिसका था कभी समस्त ब्रह्मांड कायल
प्राणियों में श्रेष्ठ होकर भी जो आज नीचे
चला जा रहा है मानव लोचन मीचे
परिणाम की न सुध, अन्त की न परवाह
जिसके मन में केवल आगे बढ़ने की चाह
परम पिता परमात्मा से मेरी विनती है यही
मानव को दिखाए राह है जो सही।

डॉ पुष्पा अंतिल
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

रंग

होके मायूस यूं ना बैठ जाइए
रंगो भरी इस दुनियां से
एक रंग को तो उठाइए,,
आँखे मूंद लीजिए जरा जनाब
इस मन को थोड़ी रोक तो लगाइए
बिखरे इन रंगों में से
किसी एक से तो रूबरू हो जाइए
रंगो भरी .....
बंद आँखों के इस काले रंग
से ना घबराइए,,
सांसे तो गहरी कीजिए जनाब
इस अंधेरे का आनंद तो उठाइए,
अरूण का उदय हुआ, मंजुल छटा बिखेर रहा
इस पीले नारंगी रंग को जरा
अन्तर तक तो ले जाइए
रंगो भरी .....
अंबर से जरा नील अंबर
का अवलोकन तो कर लो
बिन रंग की इस पवन को
जरा सांसो में तो भर लो
हर रंग में एक बात है हर रंग के
अलग जज्बात हैं
सारे रंगो को मुट्ठी में भरने की
कश्मकश में ना लग जाइए ?
रंगो भरी .....

शीला यादव
सहायक प्रोफेसर
भूगोल विभाग

समय एक बच्चा है

समय एक बच्चा है
जिसने धरती को
अंजलि में भरकर
रख दिया
सारे नक्षत्रों के बीच दौड़ की सीटी बजाकर
जिसने ठहरे ग्रहों को
धुरी पर घुमाने के लिए
गति की रस्सी को खोल दिया है
लिपटी कसी हुई बंधी हुई रस्सी को।

मैं घूमता हूँ धरती के साथ
वेग से झंझावात बनकर
थोड़ा विराम पाने के लिए
बंधी हुई रस्सी को ढूंढने के लिए
जो अब कहीं और बंध गई है।
किसी की कंपकपाती चक्कर खाती गति को आवरण में बांधकर
विराम देने के लिए
सुकून देने के लिए।
समय के ध्यान का
मेरे विश्राम का
गति का यह रास्ता बार–बार प्रारंभ बिंदु पर पहुँचता है.....
बिंदु अजन्मा होने का
अस्तित्वहीन होने का
आत्म विस्मृति का
संबंधहीन होकर भावशून्य होने का।
मरघट की शांति में खोजता मैं
बँधी हुई रस्सी और
समय की अंजलि को...।

डॉ. अमितेश बोकन,
सहायक प्रोफेसर,
हिंदी विभाग

माँ

1. याद न कर लूँ माँ को जब तक
नींद नहीं आती है तब तक

मेरी माँ बेशक अनपढ़ है
बात पते की कहती है
चलती फिरती ज्ञानकोश है
बड़ी सरल सी रहती है

2. माँ के आँचल जैसी ठंडी
छाया–सा आराम कहाँ
माँ के चरणों से बढ़कर
दुनिया में पावन धाम कहाँ
यही बात गीता, कुरान और
बाइबिल मिलकर कहती है

3. हाथों और चेहरे की झुर्रियाँ
इतिहास बयाँ कर जाती है
सबको खुशियाँ बाँट–बाँट
गम के आँसू पी जाती है
धैर्य, त्याग, करूणा की धारा
बनकर घर में बहती है

डॉ लोकेश शर्मा
सहायक प्रोफसर,
संगीत विभाग

बुढ़ापा

क्या पतझड़ का है ये महीना? जो पत्ते गिरे तो उम्र भी
या ठंडी के मौसम की है ये परीक्षा
जो गिनती के बचे हुए दिन भी
जिनके लिए पूरी जिंदगी दी, उन्हें सँवारने के लिए परीक्षा अब
उनकी है, इंतजार की घडी अब हमारी है।
ढूंढो तो खोजे, हर घर में एक बुढापा मिले
प्यारी दादी का प्यार और दादा का आर्शीवाद मिले
पोते– पोतियों का प्यार और सम्मान मिले
कमरे के साथ एक महल का आशियाना मिले
कहानियों का भंडार मिले
खुशियों की बहार मिले,
हर घर में एक बुढापा मिले।।

अलादिन का चिराग थे जो,
बन गए अब छडी का सहारा
समय का ऐसा चक्र घूमा,
जो अब भी न कहे अपने मन की दशा
तीरथ धाम में मन है डूबा,
पर परिवार की भी है अभी चिंता
राधे–राधे, राम–राम, देवों के नाम जपे,
हर घर में एक बुढ़ापा मिले

भक्ति– भाव का वातावरण मिले,
रूठा हुआ कोना, चहल–पहल जगमगाता मिले
हर घर में एक बुढापा मिले।।

सोचते हैं ये लोग, की क्यूँ ना बन जाऐ जायदाद
कम से कम बटवारें में बटकर ही,
रह पायेंगे अपने बच्चों के पास
अकेले रहकर पाल लिए कई रोग,
दवाई भूल कर बढ़ा रहे वही शोक
हट जाते है हर रोग जब याद आते हैं
अपने बच्चों के खिलखिलाते चेहरे
हाँ! कमी है हर घर में
इसलिए हर घर में एक बुढ़ापा मिले

जिन्दगी में अनुभव जैसा हीरा मिले
खुशियाँ का ताला खोलने के लिए
मीठी यादों की चाबी मिले
इसलिए हर घर में एक बुढ़ापा मिले,
हर घर में एक बुढ़ापा मिले।।

शीतल धीमान,
बी.एससी. मेडीकल,
द्वितीय वर्ष,
अनुक्रमांक– 120034030109

Editor - Yogita Bajaj
Assistant Professor (Department of English)
Student Editor - Mansi Sharma
M.A. English Final year

EDITORIAL

Yogita Bajaj, Associate Professor (Department of English)

1. Simplicity Is The ultimate Sophistication — Mansi Sharma (M.A. English Final year)
2. Cup-Id- A love tale — Seema Rathore (M.A, English 1st year)
3. Encouter of two girls — Manish (BA English hons final year)
4. You can't win if you don't begin — Nikta Sharma (M.A. 1st year)
5. The K - Pop wave in india — Sakshi Sain, (BA, english hons, 2nd year)
6. Red alert — Shivangi Bhardwaj (BA -III english hons)
7. Deceptive society — Nerru Kaydyan (M.A. english final year)
8. My Journey to vrindavan — Raunak Tiwari
9. History into herstorny — Tanu Yadav
10. The youth of present age — Sakshi Vats (english hons II years)
11. Virtual Education : It is challenges and advantages — Priyanka Bedi (B.A. english hons)
12. A daughter's letter — Chandarakanta (B.A. III rd hons)
13. Yes — Monkia (B.A. Hons geography IV Sem)
14. Quotes — Shivangi Bhardwaj (BA -II english hons)
15. About girl child — Neha Sharma (B.A. english hons III)
16. My Father.. — Priya (B.A. english hons Ist)
17. Mother — Varsha (B.C.A. 2nd year)
18. The Sky — Priya (English hons 6th sem)
19. Impact and role of mass media during pandemic — Sakshi Vats (B.A. Hons)
20. "FELUDA"- Indian Innovation for Rapid COVID-19 Test — Dr. Prachi Gupta Assistant Professor, Department of Biotechnology,

CAN VALUES BE DESIGNED

EDITORIAL

The American poet ,Archibald Mac Leish , has said: "We did not feel our knowledge. Nothin could better illustrate the flaw at the heart of our civilization. knowledge without feelings is no knowledge and lead only to public irresponsibility and indifference and conceivably , to ruin"

My Dear Students, Education enables humans to realise their full potential as a synthesis of th best in them. It helps them to register growth in every aspect of their personality-physical menta intellectual, emotional, social, moral and spiritual. But Unfortunately, Our global society i producing lop sided personalities; it is producing technological monsters with tremendou power but without a feeling of love for man. Such human beings do not give importance to truth compassion and beauty which draw their inspiration from many sources like religion philosophy, humanities , and pure sciences. Globalization and consumerism has created materialistic mindset among the people throughout the world. This has resulted in the ruthles exploitation of natural resources, climate derangement, cybercrimes, terrorism etc. Ou overpowering concern with 'here and now' has unleashed a race for more gadgets and greate materialistic gains. The situation leads us to think; Where we are today? Where we hav faulted? After pondering much on this, one basic reason that comes to my mind is that we hav let our education rot and this has resulted in humane traditions of education taking a back sea Truth, honesty and morality have begun to be totally forgotten. All our traditional values whic served as our guide for hundred of years are on the verge of disappearing. The overemphasis o science and technology without the antidote of humanism has dehumanised man and given birt to the unspeakable social injustice. Science and technology has placed incalculable riches at th feet of man and man in his greed has used them to exploit both nature and man. The need of th hour is to check shift towards technological monsterhood.

Dr.S. Radhakrishnan said ***"There is one thing worse than the devil and that is educated devil"*** We are afraid of educated people who have technique of modern science in their hand an psychological skill for propaganda purposes and man who have power without the goodness t use it. The emerging situation of war between Russia and Ukrain is a recent example and who ca forget global pandemic Covid 19.

Yogita Bajaj
Associate Professor
Department of English

"SIMPLICITY IS THE ULTIMATE SOPHISTICATION"

Simplicity is the ultimate sophistication" is a famous quote expressed by a prominent Italian polymath Leonardo De Vinci. Simplicity is a quality that makes something easy to grasp or do. Sophistication on the other hand shows civilized nature, elegance, and a refined outlook towards life and things. Simplicity Is a great virtue which one can observe in life. We are rightly advised by our elders to believe in simple living and high thinking. Simplicity rules style everywhere. Excess is never a sign of sophistication. In an age ruled by hype and glitter, a simply dressed man or woman with a touch of taste determines sartorial elegance rather than those overdressed in expensive clothes. A single flower in a vase has more grace than a large bouquet, if only we can see it ! There are lots of people who dream of simple living. They picture spending their days sitting by a lake and enjoying nature instead of going to clubs.

Henry Wadsworth Longfellow an American poet said that - 'Simplicity in character, in manners, in style, in all things; the supreme excellence is simplicity".

Even our father of nation Mahatma Gandhi practiced and preached simplicity all through his life. He believed in "Simple living and high thinking". We Indians are simple. Mahatma Gandhi never wore a shirt. Along with him most of the leaders lead a simple life and achieved a lot with their simplicity. They dressed simply, spoke simply, ate simply and lived simply. Simplycity builds character.

When we see architecture with clean straight lines, without the trappings of complicated design, the simplicity of the effect is uplifting. The architecture should be seen as neat and functional. Elegance is achieved when the superfluous is discarded and construction takes place with free-flowing spaces and interiors in harmony with environment. Homes untroubled by excess furniture and uncluttered by artifacts with clear spaces and surface suggest a minimalism and a freedom and openness that can be refreshing. It is not in the multiplicity and confusion of things that beauty is achieved. Perhaps, a plant in a corner can bring in the sense of outdoors in a room. Nowadays people prefer living lavishly. They only think about fulfilling their own desires one after the other and there is no end to it. Such people are so engrossed in gratifying their desires and impressing others by showing off their materialistic possessions that their thinking becomes limited to it. They cannot think high or develop a broad mind set. On the other hand, people who understand that they must only focus on their needs and not go after every materialistic thing their heart long for lead a simple life. They only buy things of need and focus on becoming better human beings by way of their deeds and not by showing off their belongings. They try to help those around them, involve themselves in charity work, indulge in activities to improve the environment and more importantly spend quality time with their loved ones. Living simply does not mean that we live in deprivation. It means that we should not be the victim of consumerism and unhealthy addiction to power/money. Moderation and wisdom are the keys in finding happiness through living simply. In fact, simple can be more difficult than complex, as only an uncluttered mind can think clearly. Therefore, reducing the complex to simple is a measure of creativity.

MANSI SHARMA (220034152011)
M.A. ENGLISH (FINAL YEAR)

CUP-ID -A LOVE TALE

"The love that every girl desires for"

Attention Mensturators, here you are going to read about a lover that all of us must have and we deserve too. So we are in our20's and still struggling with the immense problems caused during our menstrual cycle. I am one among you who used to get irritated so easily during this cycle due to itchiness and wetness it usually causes. Scrolling through social media I got through the little menstrual cup highlighted in my feed, probably two years back from now. I saw it but couldn't gather the enough confidence to use it. Finally this year I decide to give it a try, I received one and showed it to my mother that I will be putting this into my vagina instead of using pads during my periods. You can guess her reaction. She bashed me fearing it may cause harm to my body or it may stuck inside that can cause me through any surgical operations. She had so many questions and me being the youngest could not convince her. But my elder sister cleared everything to her regarding it and now it was a green signal for me. This little cup just changed my period life. I have been using it since 8 months and it's so comforting that I even forget I am in periods, I am able to sleep anyway I wanted, sit in a relaxed manner, wear any clothes without any worry and just countless comforts. Periods days feel like normal days now. I am glad I tried giving up on sanitary napkins and adopting this eco friendly and pocket friendly menstrual cup is the best decision I ever made. I was able to convince further to my sister-in-laws too for using it and they too are satisfied and happy with the results. I am sure whoever uses it would definitely fall in love with their period and this little cup

NAME - SEEMA RATHORE
CLASS- M.A, ENGLISH 1ST YEAR
ROLL NO. -62201034152006

"Literature is where I go to explore the highest and lowest places in human society and in the human spirit, where I hope to find not absolute truth but the truth of the tale, of the imagination and of the heart."

-Salman Rushdie

ENCOUNTER OF TWO GIRLS

Hey, mom! Where were you last night?
Missing you my beside
Fill of your scream,
I saw a dream.

Papa brought you into room,
There I imagine our doom
Same voices coming out,
Why it was too loud?

Today your face turgid like balloon,
Which earlier looked like the moon,
My eyes saw a kit of new makeup,
It put this strange mark?

Putting on the jacket of fury,
Mother told her not to worry
Hiding her tears and watering the plant,
Giving new life to greenies but
Herself can't.

Seeing the rain she wonders,
How her mother saved her
After freed from father's shackles,
Her mother never puts that makeup.

Bears everything like earth,
Gives mankind a new birth,
Her smile gives wings to fairy,
Live with her with love and caring.

Girl grew big and bigger,
She becomes rich and richer,
Fulfills all her mother's wish,
On those wounds she kisses.

And every field she set her feet,
She took world to new heights,
Decorating earth she never tired,
Receiving respect she always deserved.

NAME -MANISHA
CLASS-BA ENGLISH HONS FINAL YEAR
ROLL NO.- -3025520016

YOU CAN'T WIN IF YOU DON'T BEGIN

Achievement, Planning, Success, Aim, Efforts, Opportunity. We all are familiar with these words. If you will ask from anyone that what you want to become in your life most, of the people say that "I want to become a successful person in my life". But from them only 10% become successful but what about the 90% ?

"Everyone has the fire but the champions know when to ignite the spark".

Everyone knows that they have the fire but when this word 'But' comes in their life it means the person afraid. ***The greatest mistake a man can make is to be afraid.***

Half of the people do this type of mistake. 40% people who really want to become successful in the life. Read motivational articles or watch motivational videos. By reading or watching they are full o enthusiasm, they think that no one can beat them; they want to show that they can do it. After whil their enthusiasm comes to an end & after that they think that Bro... leave it, do what you want to, i means they lose the hope. ***The greatest power is patience.*** The person who never loses hope an enthusiastically move towards their way, they can become successful. [The day they start or the begin their life from the starting and are never tired or disappointed from their life they becom successful. Because ***"The positive mind has extra problem Solving power"*** So, Firstly make pla because proper planning prevent poor performance. So make plan for your life; take a step on the wa to success so no one can stop you. If you determine or set your mind or as well as your goal then y you can do it. So, no one can stop you. So, start today because ***Today's preparation determi tomorrow's achievement.*** You all are familiar with this line that ***Where there is a will there is a wa*** So, start to think about success. Start to think from today, make plans ***The winner always has Programme, the loser always has an excuse.*** So, put your all efforts; never get demotivated if you f down then try to start up again & very soon you can get the opportunity. Because ***Great achievemer begin with small opportunities.*** [So, put effort & you come very closer to the success. But don't proud on yourself yes, I am here. No, till you cannot achieve put some extra efforts when you achie your goals your aim you become successful. So, try harder. No one born successful. Opportuni comes in everyone's life but how do you take it, its up to you. So, You can't win if you don't begin.]

Its important to do your best and work hard, but it is equally important to remember that life itsel not a competition. Showing up to compete can yield business success but challenging yoursel healthy ways while feeling empowered can yield joy & happiness.

NIKITA SHARMA
M.A. IST YEAR
ROLL NO - 22103415201

THE K - POP WAVE IN INDIA

he first pandemic lockdown turned into second and life as we knew it came to a screeching halt. Many people found their own way to immerse themselves in different activities like cooking, baking, watching movies and of course listening to music. One genre that has gained considerable ground during the pandemic is K-pop (Korean popular music.)

K-pop song is typically performed by a group combining popular styles like pop, rock, hip - hop, op. In India, where Bollywood and English music dominate, the rise of K-pop and the emergence of s fanbase is a journey worth following PSY's 2012 viral single 'Gangnam style' was undeniebly vital n introducing K-pop to a vast majority of Indians. Just upon hearing the initial strains of the song eople across different age groups were ready to gallop on the dance floor and loudly mouth the atchphrase.

'Oppa Gangnam style'

SOME FAMOUS K-POP GROUP IN INDIA

1. BTS

BTS (Bangton Sonyeondan) also know as the Bangtan Boys, is a seven - member South Korean bay band debuted in 2013 under Big - Hit Entertainment. BTS ARMYs (Official name of their - fanbase) in India is no joke. According to an estimation in India 4 out of 10 teenagers are BTS ARMY.

2. EXO

EXO is a south - Korean bay band consisting of 9 members. The band was formed by SM entertainment One of the K-pop industry's reigning bay group, EXO has a massive fanbase across India. In 2017, as group's 5th anniversary India EXO-L raised 58,000 Rs and donated to an NGO.

3. BLACKPINK

Blackpink is South Korean girl group formed by YG entertainment consisting of 4 members. Blackpink act on the. Billboond 200" peaking at number two with the album " Ice cream " which is also the first ever album by A K-pop girl group to sell more than one million copies.

There are also other K-pop groups who are famous in India such as TXT, super junior shiner seventeen, twice.

K-pop Contest in India

In 2012 in a small auditorium in New Delhi's Jawaharlal Nehru university, 37 constestant participated in first offical K-pop contest in India attended by 300 people. Six years later, the no of constestants swelled to 898 that saw a turnout of over 21000 K-pop fans.

Praisings from AR. Rahman

Oscar and grammy - wining music composer AR Rahman in a tv interview said one should look South Korea. And its pop band BTS for the way they market their music. Praising the band. Rahman said that BTS are an example of how an artist from different market can gain success on global stage. He said that we know that parasite (Korean Movie) won the Oscar. They had one h - Gangnam style and they followed it up. Now there is BTS also.

Biggest India - Korea Collob

Singer Armaan Malik recently collaborated with Korean-American singer Eris Nam and music producer KSHMR to create the song 'ECHO' He is also a member of EXO-L EXO fanbase. He said that his favourite member in group is Chen.

K - POP SONGS THAT MOTIVATES NEW GENERATION

1. 'Goodbye' - B.A.P

'Failure is what makes me stronger,
Fear is what makes me run.'

In these lyrics, they inspires us to use our failures and fears as motivation to be even better.

2. "Nevermind" - BTS

"If you think your are going to crash, step on the pedal hander.

Nevermind, Nevermind,

even it's a road of thorns we run".

The lyrics inspires us to fight for our dream. Sometimes it pays to take risk and if you caught up worries about failing hit the brakes, you won't get very far so step on the pedal.

In 2017 BTS band partnered with UNICEF to promote the LOVE MYSELF compaign in hopes ending violence against youth.

As on K-pop lover, I thing that k-pop has crossed the language barriers. Even though the langua is different but the motivation, we, new generation gets from the songs is boundless.

NAME - SAKSHI SAINI
ROLL NO - 120034062040
CLASS - BA (ENG HONS) 2ND YEAR

RED ALERT

She is screaming,
Screaming in pain.
Her deafening roars are
Tearing my heart apart.
For she is victim
Of perpetual debasement
By her own sons and daughters
Honoured as "The wisest of beings".

The cosmic oceans that
She held with pride,
Have ebbed to teardrops
Leaving us struggling to survive.
Her green treasure trove
That offered utter love,
Transformed to Pandora's box
Effusing cigarette's puffs.

Riches that she concealed
Beneath her skin,
Have been robbed by the gypsies
Lingering on the brim
Beauty and the beasts
That were gems of her crown,
Are now nowhere seen
'cause preyed by men's frown.

O sacred souls!
Conquer your greed
Mother earth is on deathbed,
Don't let her body bleed.
Yearning for fleeting pleasures
Squandering all the might,
It's high time that you were
Led by your own divine light.

SHIVANGI BHARDWAJ
ROLL NO-2144220043
BA-III ENGLISH HONOURS

र्मण्यकर्म य : पश्येदकर्मणि च कर्म य :।
। बुद्धिमान्मनुष्येषु य युक्त : कृत्स्त्रकर्मकृत्।।

र्थात :– जो मनुष्य कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म देखता है, वह सभी मनुष्यों में बुद्धिमान है और सब प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त रहकर भी दिव्य स्थिति में रहता है।

गीता, अध्याय 4

DECEPTIVE SOCIETY

All are here to say', I hear you'
But who proves, ' I am with you?

We, the youth is all lost,
and society as our host.
Society, negging all around,
pelting their thoughts and bringing us down.

And some brood stay in grace,
and some are ready to chase;
to clinch success,
Those philonoist believe in process.
Process, to shrug off the criticism,
And ruminating about the passion.

Remember, no one is impeccable,
But, we youth can return back as invincible.

NAME : NERRU KAYDYAN
CLASS : M.A. ENGLISH (FINAL YEAR)
ROLL NO. 220034152016

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ।।

अर्थात :– प्रत्येक इन्द्रिय तथा उसके विषय से सम्बन्धित राग–द्वेष को व्यवस्थित करने के नियम होते हैं। मनुष्य को ऐसे राग तथा द्वेष के वशीभूत नहीं होना चाहिए क्योंकि ये आत्म–साक्षात्कार के मार्ग में अबरोधक हैं।

गीता, अध्याय 3

'MY JOURNEY TO VRINDAVAN'

Often when I am alone
I like to get lost,
Close my eyes
drift away in a mystic world

My mind is Vrindavan,
where I take long walks
my mind is still,
as I am in the Goverdhan foothills.

But stillness in mind doesn't satisfy me whole
as for the heart, it is still being enrolled.
It weeps for the day and night long
the arms want to hold them strong.

Whom do you hold, asked the mind?
Who are those whom you trust blind?
Are they any king date or lover ?
Why their memories keep you sober ?

Just a little princess and a cowherd boy
whose one glance fills me with joy.
The heart cried in wild
searching them in 84 miles.

I would rather go to Yamuna,
they might be performing raas,
Oh I saw their footsteps
They might be stealing butter at doorsteps.

All at sudden , I lose the heart
my soul and senses became blessed,
O Sakhi the time should stop
can't let this moment to drop.

Tears are restless in my eyes;
the divine view which can't be described.
My soul and body have became Vrindavan
on the throne of my heart, there's sitting my 'Radha Raman'

NAME : RAUNAK TIWARI
CLASS : BA ENGLISH HONS IIND YEARS
ROLL NO . 120034062035

HISTORY INTO HERSTORY

Defined by no man,
you are your own story,
blazing through the world,
giving new life and
turning the history into herstory

They won't tell you fairytales,
Of how girls can be dangerous and still win.
They will only tell you stories
where girls are sweet and kind.
and reject all sin.

I guess to them it's a terrifying thought.
of a Red Riding Hood
who knew exactly
what she was doing
when she invited the wild in.

They won't make you ambitious and touch the sky with freedom being fearless,
fearless of everything.
They will rather only ruin your body, tell the household stories;
and close in the cage of fearful anxiety

And when they dare to tell you about
all the things you cannot be
you smile and tell them
"I am both war and women and you cannot stop me"
that's the moment of history into herstory.

NAME : TANU YADAV

इहैव तैर्जित : सर्गो येषां साम्ये स्थितं मन :।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिता :।।

अर्थात :– जिनके मन एकत्व तथा समता में स्थित हैं उन्होंने जन्म तथा मृत्यु के बन्धनों को पहले ही जीत लिया है। वे ब्रह्म के समान निर्दोष हैं और सदा ब्रह्म में ही स्थित रहते हैं।

गीता, अध्याय 5

THE YOUTH OF PRESENT AGE

e deepest definition of youth is life as yet untouched by tragedy"

- Alfered Whitehead

th is a phase of one's life, the age where one is no longer a child but a grown up. It is a gloden phase to a plish the dual goals of intelligence and character. It has been rightly said that we spend first half of our s trying to understand the older generation and the second half in understanding the younger generation. ry age has its own charm; youth has always felt somewhat exasperated with old age and old age has always n suspicious of youth.

re are some of the charges brought against youth in present scenario. They represent a rudderless eration without any ideals to live by or cause to live for. On the slightest pretext they come on streets, alging in violence. They want to attract attention through unconventional behaviour, the best example of is the protest done by College students for cancelling the exam after covid-19. Some of the youngsters are coming a generation of drug addicts and have developed an aversion to honest hard work, ever on the look out have something or nothing. It's no longer anxious youth going forth into an anxious world. If we come to think out it, it is not only the youth which is restless, human society itself is in a state of flux. The children get all the ney from parents which they need and seldom face the need to work for a living. In the under developed untries also, young generation are feeling disgruntled because their vision of happy future is being literated either by internal strife or political opportunism. This provokes the youth to protest against rampant rruption in society and denial of social justice.

any of the people say that youth are impatient.... yes they are, as impatience is the latest fashion. The voice d the acts of young spirit very well reflect the power of impatience in the present scenario. Impatience is a fuel today's era which acclerates us in tough competition. To an extent it is true the days are gone when people used wait on with patience for their efforts. (The youngster not only work for their goal endlessely but this so called patience modifies and bring to them their goals lavishly.) If we look at youth today, it will be apparent that they ot young alone who are to blame for the state of mind in which we find them. They may well be charged with eing ignorant of what they want. Violence comes naturaly to youth. The young supremely sure that the uthority against which they are up in arms is unjust and oppressive and feeling certain of their correctness of heir own stand, react emotionally. The intensity of their feeling is such that it fills them with hatred and turn to iolence.

On the whole, the younger generation today is much misunderstood and maligned than it deserves. The world is going to inherit much from their wisdom, strength and agieity . It will be immensely more exciting than the world of its predecessors. As we all know that youth is mirror of a country as from them only we get our upcoming scientists, doctors and many more. So it is all upon them how they present their country in front of world.

To conclude we can say that youth is a golden period to cherish a big dream full of passion and energy. It is a time when we can provide shape to our ideas for the development of society. Also it is a time to move towards the destination which can be made possible only through vocational awarnesss and critical study of individual differences.

Name - Sakshi Vats
Class - English Hons. IIIrd years
Roll no. - 3025520055

VIRTUAL EDUCATION : IT IS CHALLENGES AND ADVANTAGES

The spread of corona virus has forced colleges and universities to turn to virtual learning as it was n safe for the students and teachers to come to the colleges or schools for teaching so all of them h shifted to virtual learning or online classes. We all know that online learning is very normal now da for everyone. The age of computer based learning allows aspirants of knowledge to lay hands o comprehensive study material provided by Online interfaces. Such a learning environment in whic the instructors and students are separated by space has its own set of advantages and challenges.

Let us first see the advantages of virtual learning. Firstly in virtual learning we have the freedom study and complete our work 24x7. We can take classes from anywhere anytime. All we need for th virtual learning is our smart phone and laptop or other digital device. We have effective tim management as an online class or online education provides a working enviroment for adults wh need to manage work and family. One big advantage of virtual learning is that digital skills of th students are sharpened by increasing the knowledge and skills in the area of study of a students.

As we all know that if a thing has advantages then it will also have some challenges The main proble faced by many of the students is the availability of gadgets. The students who are poor are not able afford the laptops or smarts phones for taking online classes so they are not able to study at this tim The next challenge which is faced by many of the students is network issues. The students who are villages suffer from the issues of network. When teachers take online classes many times there a network issues through which videos and voice of the teacher is not properly audible . In virtu learning many students face the problem of weak eyesight. As we work on phones and computer laptops for many hours it affects our eyesight very badly. Physical interaction between students an teachers is not properly done. There are many times when students are not able to understand concep properly.

To conclude this topic we can say that the platform of virtual education is good for students who ca afford phones or laptops but keeping in view the present scenario it is the only option available.

NAME : PRIYANKA BEDI
CLASS : B.A. ENGLISH HON
ROLL NO . 120034062011

A DAUGHTER'S LETTER

For I am a daughter
Would you be my father?
Not the one that society crafts you!
But the father my only one...
Would you take me to the trip,
Where father-ship ends,
Begin hence forth where friendship trends!
Will there be a day?
Would be questioned not.
But get answers a lot!
For question, I don't dare to ask! Will you
make'em an easy task?
There I wonder what life will be?
When I will sleep with dreams
But realities will wake me!
Where principles will not hold the bond
But where our trust will make it strong.
Oh! now I shall come out of illusions...
Something is breaking my lovely delusions.
For why I say now!
Oh dad...
You said... You always said...
You said I'm a bird!
Now, I shall make a confession,
I will fly away soon.
Your society will snatch me
From your warm hands
Someone will rip my dreams around..
Then you will find me lost..
But lost, I already am..
Find me dad !
Make me close to you..
Before I go away
Make me stay!
For few years of my life
Do let me say, what I feel like let me convey.
Don't let my fears take me
Don't let anyone fake me..
When I will be gone..
I will be grown..
May be I will then cry alone !
You will not be there to calm me down
So do now dad!
Do ask me now!
Make me free in your loving arms
Do let me say
Let your ears hear!
You daughter is not a protester but a little diff.
Not by morals but by perpectives...
Dad please be a friend and let my fears end..
Before you send me to a new home..
Do make me feel this one my very own.
My very own!

NAME : CHANDRAKANTA
B.A. 3RD HONS
ROLL NO- 3025520015

थोथे बादर क्वाँर के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भये, करै पाछिली बात।।

रहीम

YES

Feeling the presence of bliss
When I look at the sky
Feel that, its my dream that fly
Nevertheless, what happened next,
I will just say yes..

I have a ques,
That it's a dazzling light of moon
Or something like dream which
Is coming soon,
Nevertheless , what happened next
I will just say yes ....

That's it what I wanna say

If rain beats your door and windows
Open from your heart's care,
Just feel me in that drops

If sun woke you up,
Feel me in that sunshine,
If I say or not, listen me
And just feel me in that blank line

If wind touches your face
Find my name, that speed up your heart rate

And just feel me in that space .

MONKIA
B.A. (HONS) GEOGRAPHY (4TH SEM)
ROLL NO. 2144720079

QUOTES

* Mom,
you taught me the art of
braiding my hair
and
braiding hearts too.

* Let the storms
tear you up by the roots.
Get yourself grafted upon
wild new places.

* She broke away like
a piggy bank,
finally found that hidden treasure
inside her,

* May you find your sunshine.
Before the sunset.

* Once you start
counting the stars,
darkness disappears!

* Life's too short to play safe.
Get vulnerable.
Make blunders.
Grow.

* The present
is a present.

* Don't be a parasite.
Be a host
always.

* Dream, work ,grow, Repeat.

* Religions are rivers
that end up in the same
holy ocean.

* I see the light
in everything
to overcome
my own darkness.

* Some of the most
beautiful destinations
are backed by
the ugliest paths.

* It would always be
worth your while
to give it
your all.

* Escape into eternity.

* May you see that
sparkling soul
behind those
ugly scars.

Name : Shivangi bhardwaj
Class : B.A. -2 English (hons)
Roll no . 2144220043

ABOUT GIRL CHILD

The coming of a boy brings a happy environment;
So why does the coming of a girl child makes everyone silent.
By killing them we become innocent,
By killing them we kick God's present,
Killing before birth is our worst conception,
Let us give her the pleasure of education.
They fulfil our expectations
And what is wrong,
If we give them
The honour and respect.
Give them the boon of independence and love,
They can touch the sky
And become the nation's dove
Without mother, sister, there is emptiness,
They are the goddess and bring happiness.

NAME _ NEHA SHARMA
CLASS B.A ENG HONS.IIND YEARS
ROLL.NO. 214422003

अम्भोजिनी वनविहार विलासमेव हंससय हन्ति नितरां कुपितो विधाता।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्नुमसौ समर्थ :।।

अर्थात :– रूष्ट हो जाने पर विधाता कमलिनी वन में हंसों को विलास करते हुए भले ही रोक ले, लेकिन उनकी जल एवं दूध को पृथक् करने वाली प्रख्यात कला (गुण) को नहीं मिटा सकता।

भर्तृहरि

MY FATHER...

You are the one,

who taught me to live my life,

Even in bad times and strife.

You are the one, who makes me laugh,

You are the one who makes my problems less than half.

You are the light in a dark sky,

You help me reach high and high.

Happiness is what you always add,

I am glad to have you as my dad.

If I am the tree, you are the root.

If I am the fruit, you are the seed.

You are the one who has magic in your hand.

You are the backbone because of which

I can stand straight,

I know you are very great.

NAME : PRIYA
B.A. ENGLISH HONS SEMT. 1ST

सिंहः शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेशु।
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां न खलु वयस्तेजसो हेतुः ।।

अर्थात :– सिंह का एक शावक भी मदोन्मत हाथी पर हमलावर हो जाता है। ठीक ही है, शक्तिशालियों का यही स्वभाव होता है। तेजस्विता का संबंध आयु से नहीं होता।

भर्तृहरि

MOTHER

God send mothers in every home
To show his presence in all zone

When I cry she swipes my tear
And she escapes me from every fear.

Mother is so precious
Don't make her sad.

If you don't obey her
It is so bad

I feel so special that I got her
The most loving and kind lady is my mother.

Name - Varsha
Class - B.C.A. 2nd year
Roll no. 2947820014

माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम।
तीन पैग बसुधा करो, तऊ बावनै नाम।।

THE SKY

O SKY, HOW DO YOU LOOK SO PEACEFUL

Why enthuastically beautiful,
Fell in love with you every time
Not today.. But for every time

Birds flapping their wings..
You support their flight..
Bright are the colours of your light
Serene you look too during night

With reddish orange you break the day
Look like a saint who pray.
Blue decorated with white cloud
gives in every heart, a feeling of proud.

NAME : PRIYA
ENGLISH HONS 6 SEM
ROLL NO. : 3025520011

"Literature is strewn with the wreckage of those who have minded beyond reason the opinion of others."

-Virginia Woolf

IMPACT AND ROLE OF MASS MEDIA DURING PANDEMIC

The outbreak of corona virus pandemic has created a global health crisis that had a deep impact on the way we perceive our world and our everyday life. Not only the patterns of transmission threaten our sense of agency, but the safety measures put in place to contain the spread of Covid - 19 virus also require social distancing. Within this context of physical distancing, as well as public alarm, what has been the role of the different mass media channels in our lives on individual and social level.

Mass media has long been recognized as powerful forces shaping how we experience the world and ourselves. This recognition is accompanied by a growing volume of research, that closely follows the foot steps of technological transformation and in attempt to map mass media major impact on how we perceive ourselves both as individuals and citizens. In the face of covid - 19 social media and mass media is a great way for individuals and communities to stay connected even while physically distance. Critical role of the mass media is to keep people connected, well informed and entertained. The impact of media was seen in the covid-19 crises in promoting emotional stability among people. Mass media became the major source of information of novel corona virus. Mass media has an imperative role in today's world and it can provide a unified platform for all public health communications, education guidelines and social distancing strategies while still maintaining social connections. The role of mass media and public health communications must be understood and explored as it will be an essential tool for combating covid-19 and future outbreaks.

Mass media helped people effectively during corona virus. As it was mass media only through which all of us came to know about what is happening in the world at the time of covid-19 pandemic, we also came to know about how many people are affected by covid-19 in India and in other countries also. With this frame work of complexity, the impact and role of mass media during covid-19 pandemic can not be understated . To conclude this topic we can say that mas media helped people in every manner. There is a very positive impact of mass media on the lives of people. Mass media kept all the people informed and stress free.

NAME : Manisha
B.A. HOSN IIIrd years
ROLL NO : 3025520016

"FELUDA"- Indian Innovation for Rapid COVID-19 Test

Health sector and allied services worldwide are battling with the recently emerged Severe Acute Respiratory Syndrome coronavirus-2 (SARS-CoV-2) or in short, coronavirus disease 2019 (COVID-19) pandemic with the available resources and knowledge. Being a fellow of Biotechnology, I have read many times and also taught about the brutal pandemic diseases occurred in human history like cholera, bubonic plague, smallpox, influenza, AIDS etc. that had created records of around 500 million deaths worldwide. But now I have witnessed such pandemic so closely, and have experienced the adverse effect of such deadly disease not only in health sector but also in other socio-economic-psycho-political sector.

India is the second-most populous country after China and the second worst-hit nation by the COVID-19 after the United States of America. The biggest issue observed was the rate at which virus has spread in the population. In not more than three months, the virus had conquered the entire world and COVID-19 was declared as the deadliest global pandemic. In this situation, where doctors are promoted as frontline warriors struggling to save maximum infected ones, simultaneously on the back side biotechnologists and researchers are pressurised to unravel the mystery of the virus starting from zero. The challenge was big, so the scientists all over the world stood together on a platform to resolve the hidden truth related virus genome, its pathogenicity, preventive strategies, therapeutic drugs and diagnostic tools. One such difficult challenge was to prevent the virus from spreading to more individuals, and for this it is of great importance to identify and isolate infected individuals through testing.

In order to detect the infection, it is necessary to check the presence of viral antigens or viral RNA in the respiratory sample, or the presence of antibodies against the viral proteins in the blood sample. For this, Rapid antigen tests have been developed for the diagnosis of COVID-19, but the sensitivity of these rapid antigen tests found to-be very low. Generally, antibodies against virus including SARS-CoV2 takes several days to weeks to reach a detectable level in the blood after the onset of COVID-19 symptoms; therefore, antibody tests cannot provide sufficient sensitivity for diagnosis of acute infection. Thus, moving forward to detect nucleic acid grabbed the attention as nucleic acids tests can detect even a very small number of viruses in clinical samples. Therefore, Reverse transcription-quantitative polymerase chain reaction (RT-qPCR) tests have been developed and used for the detection of SARS-CoV-2 worldwide. And in no time RT-qPCR became the gold standard method for the diagnosis of coronavirus disease (COVID-19) worldwide. Although it has made a great contribution in combating the pandemic, still performing RT-qPCR is limited to centralized laboratories because of the need for sophisticated laboratory equipment and skilled personnel. Besides, concerns are increasing related to the error rate of RT-qPCR tests designed for the detection of SARS-CoV-2. Considering all these reasons, scientists/ researchers emerged out with an alternative efficient diagnostic method that is more rapid, scalable, and can enable widespread testing of COVID-19.

"FELUDA" (FNCas9 Editor Limited Uniform Detection Assay) - first CRISPR/Cas9 rapid test available for COVID-19 detection. The FELUDA paper strip test is the outstanding result

of research done at the Institute of Genomics and Integrative Biology (CSIR-IGIB) based in New Delhi, India. After completing trials on over 2000 samples in CSIR-IGIB and private labs, the test was found to be more efficient with 96% sensitivity and 98% specificity. The test named "FELUDA"– was approved by the Drug Controller General of India (DCGI) for commercial launch. It gets its name from the famous fictitious detective of Indian-Bengali novels written by famous film director Satyajit Ray. The FELUDA test provides quick and accurate results which uses two important components i.e., a protein named FnCas9 and RNA named guide-RNA (gRNA). The complex of these two component aids in locating the SARS-CoV2 genes in the amplified viral DNA which is obtained after single step RT-PCR of RNA extracted from the nasopharyngeal swab of suspected samples. In case of the positive sample, viral genes-FELUDA complex binds to the gold nanoparticle present on the strip. Finally, the colorimetric result is visualized when a protein named Streptavidin in paper strip captures the gold nanoparticle bound with FELUDA complex. In negative sample unbound gold nanoparticles remains at the control line. The complete paper test takes around one to two minutes. In compared with RT-qPCR test, FELUDA paper strips are cheaper and doesn't require any technical expertise. In short, it saves money, space and most precious the time. Also, development of FELUDA Do-it-yourself/at-home detection kit is in pipeline.

Dr. Prachi Gupta
Assistant Professor,
Department of Biotechnology,

जादू से विज्ञान का जन्म होता है क्योंकि जादू बाह्य यथार्थ को कुछ नियमों का पालन करने का आदेश देता है और यथार्थ इससे इनकार करता है और इस तरह यथार्थ की हठीली प्रकृति के ज्ञान की छाप जादूगर पर पड़ती है। वह मंत्र –प्रभाव से पानी पर चलने की कोशिश नहीं करता, या यदि करता है तो मंत्र –प्रभाव निष्फल हो जाता है। मंत्र से वृष्टि कराने वाले रेगिस्तानों में नहीं पाए जाते, बल्कि वहाँ पाए जाते हैं जहाँ वर्षा यदा–कदा आती है।

क्रिस्टोफर कॉडवेल

"What is wonderful about great literature is that it transforms the man who reads it towards the condition of the man who wrote."

-E.M. Forster

संस्कृत – अनुभव (रमणीक 2020 – 2021)

संपादक – वजीर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत – विभाग
छात्र सम्पादिका – शिवम कुमारी
बी० एससी० (द्वितीय वर्ष)

सम्पादकीयम्

वजीर सिंह

1. अस्माकं गुरू
2. संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्
3. आत्मनपदीया
4. स्वच्छतायाः महत्त्वम्
5. भ्रष्टाचारः
6. स्वामी विवेकानन्द
7. गौः
8. मयूरः
9. संस्कृत गीतः
10. सुभाशितानि
11. आत्मनेपदीया
12. संस्कृत गीत
13. विश्वशांतिः
14. अनुशासनम्
15. ईशस्तवः
16. एकता
17. विद्या
18. विद्यामहिमा
19. आचार्य देवो भवः
20. माता
21. गङ्गा नदी

1. शिवम कुमारी बी. एससी. द्वितीय वर्ष
2. शिवम कुमारी बी. एससी. द्वितीय वर्ष
3. योगिता, बी. ए. प्रथम वर्ष
4. निकिता, बी. ए. प्रथम वर्ष
5. वन्दना, बी. ए. द्वितीय वर्ष
6. मेघा, बी. ए. द्वितीय वर्ष
7. पूजा, बी. ए. द्वितीय वर्ष
8. श्वेता, बी. ए. तृतीय वर्ष
9. सरिता, बी. ए. प्रथम वर्ष
10. शिवानी यादव बी. एस सी. द्वितीय वर्ष
11. दीक्षा, बी. ए. प्रथम वर्ष
12. आचूकी शर्मा, बी. ए. प्रथम वर्ष
13. भाविका, बी. एससी. तृतीय वर्ष
14. नीशू, बी. ए. प्रथम वर्ष
15. नेहा, बी. ए. प्रथम वर्ष
16. मुस्कान, बी. ए. प्रथम वर्ष
17. मोनिका, बी. ए. प्रथम वर्ष
18. मधु, बी. ए. द्वितीय वर्ष
19. पूजा रस्तौगी, बी. ए. प्रथम वर्ष
20. पूजा रस्तौगी, बी. ए. प्रथम वर्ष
21. सोनिका, बी. ए. द्वितीय वर्ष

सम्पादकीयम्

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधयत।।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

कठोपनिषद

एतत् कथ्यते यत् यावज्जीवनमस्ति तावत् विद्यार्थी जीवनमपि अस्ति। इदं वचनं सत्यं खलु। यदि मनुष्य विद्याम् अर्जितुं तत्परः भवति तर्हि सः जीवने सुखं साफल्यं च प्राप्नोति। आगमकालेन, स्वाध्यायकालेन, प्रवचनकालेन व्यवहारकालेन च विद्या आगच्छति। सर्वप्रथम मातुः शिक्षां ग्रहणं कृत्वा तस्य विद्यार्थीजीवनस्य प्रारम्भः शिशुविद्यालयात् भवति। ततः विद्यालयात् तत्पश्चात् च महाविद्यालयात् शिक्षां प्राप्नोति। विद्यार्थीजीवनं मानवजीवनस्य मुख्याधारः कथ्यते। अस्मिन् जीवने यादृशी शिक्षां प्राप्यते यान् संस्कारान् लभते, तेषाम् उपयोगः समस्तजीवने भवति। अतः विद्यार्थिनाः सर्वप्रथम कर्तव्यं यत् विद्यापठने कदापि आलस्यं न कुर्युः। उक्तं च –

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

समयस्य समुचिते रूपे उपयोगः एव समयस्य सदुपयोग कथ्यते। संसारे बहूनि वस्तुनि बहुमूल्यानि सन्ति परं तेषु सर्वापेक्षया बहुमूल्य वस्तु समय एवोऽस्ति। यतः अन्यानि वस्तूनि विनष्टानी अपि पुनः लब्धुं शक्यन्ते परन्तु गतः समयः केनापि उपायेन पुनः लब्धुं न शक्यते।

अस्माकं भारतीयानां कृते अयं राष्ट्रनिर्माणस्य कालोऽस्ति। राष्ट्रनिर्माणे लेखनविधायाः अपि महती भूमिका भवति। वस्तुतः लेखनविधा एव विद्यार्थीं लेखकं च तस्य श्रेष्ठ कर्तव्यस्य प्रति सचेतः करोति। ताम् लेखनविधां अङ्गीकृत कृत्वा महाविद्यालयस्य प्राचार्य प्रधानसम्पादकेन च महाविद्यालस्य पत्रिका 'रमणीके' महाविद्यालयस्य छात्राणाम् तिसृषु भाषासु मौलिक रचनाः प्रकाशनं कारयित्वा ताः नवीन लेखन रचनानां प्रति अग्रसरः कृत्वा राष्ट्रनिर्माणस्य धारां एवं प्रवाहित कृतवान्। उक्तं च–

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

वजीर सिंह
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत – विभाग

अस्माकं गुरू

जीवनस्य सर्वेषु क्षेत्रेषु गुरोः आवश्यकता अस्ति। आज्ञानेन आवृते नेत्रे गुरूः ज्ञानशलाकयोः उद्घाटयति। यद्यपि ग्रंन्थाः गुरवः इव ज्ञानं वितरन्ति तथापि ग्रन्थेभ्यः जातं ज्ञानं निःसनिदग्धं न भवति। एतादृशेन ज्ञानेन आत्मविश्वासः न जायते। गुरूमुखाद् आगता विद्या निःसन्दिग्धा आत्मविश्वासकरी च सम्पद्यते। अध्यात्मशास्त्रे तु गुरोः माहात्म्यं देवस्य महात्म्याद् अपि अधिकम् उक्तम् – व्यवहारे अपि गुरोः ऋणस्य अपाकरणं कथम् अपि न शक्यं यतः अन्नेन क्षणिका तृप्तिः भवति परं विद्यया आजीवनं तृप्तिः भवति। अतः वयं प्रतिदिनं गुरोः महिमानं गायामः–

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

नाम – शिवम कुमारी
कक्षा – बी. एससी. द्वितीय वर्ष
रोल न० :– 2945720311

स्वच्छतायाः महत्त्वम्

'स्वच्छता एका क्रिया अस्ति। यस्मात् अस्माकं शरीरः मस्तिष्कः वस्त्राणि, गृहाणि कार्यक्षेत्राणि च शुद्धः पवित्रश्च भवति। अस्माकं शारीरिक – मानसिक स्वास्थ्यायं स्वच्छता' अत्यावश्यकम् अस्ति। अस्मान् स्वच्छतां निज स्वभावे जीवने च स्थापयित्वा अस्वच्छतायाः सर्वथा परित्यागं कुर्वेत्। यतोहि अस्वचछता सर्वेषां रोगाणां मूलाधारम् अस्ति।

यः जनः प्रतिदिनं स्नानं न करोति, निज वस्त्राणि न प्रक्षालयति, गृहं निकषा पर्यावरणं मलेन प्रदूषितं करोति, सः तु सर्वदा रूग्णः भूत्वा दुःखी भवति। मलयुक्त क्षेत्रेषु अनेके कीटाणवः प्रादुर्भवन्ति। ये अनेकान रोगान् जनयन्ति।

एतस्मात् कारणात् स्वच्छतायाः विशेष महत्त्वम् अस्ति। भोजनात् पूर्व हस्त प्रक्षाल्य भोजनं कुर्वेत्। शारीरिक – मानसिक स्वच्छतायै अस्माकम् आत्मविश्वासं वर्धति। सम्पूर्ण भारतवर्ष स्वच्छतायाः प्रचार – प्रसारणाय भारत सर्वकारेण अनेकानि कार्यक्रमाणि सामाजिकनियमाश्च निर्मितानि।

नाम – निकिता
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० – 2400

संस्कृत – भाषायाः महत्वम्

व्याकारणसम्बन्धिदोषरहिता व्यवस्थितक्रिया – कारकसमन्विता या भाषा सा संस्कृतभाषा कथ्यते ।सम्प्रति अस्मांक देशे अनेकाः भाषाः प्रचलिताः सन्ति। यथा – हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, उड़िया, आसामी, प्रभृतयः। संस्कृतभाषया एव एतासां भाषाणम् उत्पतिः। अस्माकं भारतीयानां समस्तं साहित्यमपि संस्कृत भाषायामेव वर्तते। अस्माकं सर्वप्राचीन ग्रन्थाश्चत्वारो वेदाः उपवेदाः वेदाङ्गानि, दर्शनशास्त्राणि, धर्मशास्त्रम्, अर्थशास्त्रम्, कामशास्त्रम्, पुराणानि, उपपुराणानि, काव्यम्, नाटकश्चेत्यादि समग्रमपि विशालं ज्ञानविज्ञानवैभवं संस्कृतभाषामेव निबद्वं वर्तते। बाह्यसाहित्यातिरिक्त जैनधर्मस्य बौद्धधर्मस्य च महत्वपूर्णाः ग्रन्थाः संस्कृतभाषामेव लिखिताः सन्ति।

भारतस्य सम्पूर्ण इतिहासः संस्कृतभाषामेव निबद्धो वर्तते। देवासुराणाम् आख्यानम्, अवताराणां कथाः महापुरूषाणां चरित्राणि, राजनैतिक वृतान्ताः वंशोपवंशानां विस्तृतं वर्णन भारतीयानां विदेशेषु गमनं, समुल्लिखितं वर्तते।

महर्षिवाल्मीकिविरचितस्य रामायणस्य द्वैपायनवेद व्यासविरचितस्य महाभारतस्य च लोकोतरं महत्वं वर्तते संसारे साहित्ये च। संस्कृतम् ऋते भारतीयेतिवृतपरिज्ञानाय न अन्यः कोऽपि पन्था विद्यते। भारतीयानां धर्मः संस्कृतिः सभ्यता, इतिहासः सदाचारादीनां विषयाणां कला, ज्ञानम्, रीतिः , नीतिः , किमपि ज्ञानं संस्कृतं विना नैव भवति। अनेनैव कारणेन भारतीयजनतायाः कृते संस्कृत शिक्षाया महती आवश्यकता वर्तते। यतः भारतस्य प्राणभूते द्वे विद्येते – संस्कृतं संस्कृतिश्च। अत एवोक्तम् – "भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा इति। यस्य संस्कृतस्य ज्ञानं न भवति, तस्य भारतीयतायाः किमपि ज्ञानं नैव भविष्यति। भारतराष्ट्रस्य विभिन्नप्रदेशेषु सांस्कृतिकदृष्टया ऐक्यसंरक्षणाय संस्कृतस्य महती आवश्यकता वर्तते। कालिदासः, अश्वघोष, भवभूतिः, भासः, माघः, धनवन्तरिप्रभृतयो महाकवयः संस्कृतभाषायामेव ग्रन्थान् निर्माय धन्याः सञ्जाताः।

नाम – शिवम कुमारी
कक्षा – बी. एससी. द्वितीय वर्ष

आत्मनपदीया

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायति क्षयमायति संचयात्।

मनोजवं मारूततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये

कुसुम वर्णसम्पन्न गन्धहीन न शोभते।
न शोभते क्रियाहीन मधंरं वचनं तथा।

शतेषु जायते शूर : सहस्रेषु च पण्डित।
वक्ता दशसहस्त्रेषु दाता भवति वा न वा।

लोभाविष्टो नरो वित्तं वीक्षते न तु सकङ्टम्।
दुग्धं पश्यति मार्जारो न तथा लगुडाहतिम्।

अपारे काव्यसंसारे कविरेक प्रजापति।
यथास्मै रोचते विश्वं तथा वै परिवर्तते।

वनस्पतेरपकानि फलानि प्रचिनोति यः।
विन्दते न रसं तेभ्यः बीजं चापि विनश्यति।

नाम – योगिता
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० – 109

भ्रष्टाचारः

भारतवर्षे भ्रष्टाचारः असाध्यरोगवत् प्रवर्तते प्रवर्धते च। अयं न केवलं केपुचिदेव जनेषु वर्तते, अपितु वटवृक्षवत् शतमूलः सन् सार्वत्रिको रोगः प्रतिदिन वर्धत एव।। सर्वे जनाः अस्य प्रसारेण चिन्तिताः सन्ति, परन्तु कोऽपि सर्वकारः अस्य समूलां मूलनाय बद्धपरिकरः।

भ्रष्टचारो नैकविधः अनेकऽस्य प्रकाशः यथा – उत्कोच प्रदानम्, खाद्यवस्तुषु अखाद्यस्य मिश्रणम् अनुचित – साधनेन धनोपार्जनम्, स्वकर्तव्यं प्रति विमुखतां इत्यादवः।

भ्रष्टाचारस्य अन्यद् रूपं वर्तते। राजकीय कार्यलयेषु यावद् उत्कोचो न दीयते, तावत् तस्य प्रार्थनापत्रं अग्रसारितं न भविष्यति। यदैव उत्कोचस्य व्यवस्था क्रियते, तदैव तत् प्रार्थनापत्रं अग्रसारितं क्रियते। एवमेव व्यापार आदि व्यवसादिनो महार्घ – वस्तूनां मध्ये अशुद्ध – वस्तूनां मिश्रणं कुर्वन्ति। तद् यथा – तैले, घृते खाद्यवस्तुषु, पेट्रोलादिषु मिश्रणं प्रायः सर्वत्र सलंक्ष्यते।

भ्रष्टाचारस्य निरोधार्थं कठोर दंड व्यवस्था स्यात्। राजपुरूषाः तत्पालने सर्वात्मना प्रयत्नशील भवेयुः। कठोरायां दंडव्यवस्थायाम् अपराधिनां मनोबलं क्षीयते, ते दण्डाद् बिभ्यति।

नाम – वन्दना
कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष
रोल न० – 2947620372

कुल की प्रतिष्ठा भी सदव्यवहार और विनम्रता से होती है, हेकड़ी और रौब दिखाने से नहीं।

मुंशी प्रेमचंद

स्वामी विवेकानंद

आधुनिक भारतस्य निर्माणकर्तृषु युगपुरूषस्यं विवेकानन्दस्य नाम सर्वोपरि आस्ति, सः न केवलं भारते अपितु सम्पूर्णविश्वे अध्यात्मलोकं विकीर्णयति स्म। तस्य महापुरूषस्य जन्म 1863 तमे वर्षे अभवत्। विश्वनाथदतः तस्य पिता आसीत्। बाल्यकाले विवेकानन्दस्य नाम नरेंद्रनाथः आसीत्, बाल्यकालादेव सः अति मेधावी आसीत् अध्यात्मविषये तस्य महती रूचिः आसीत्। नरेन्द्रः यदा स्नातकोऽभवत् तदा तस्य पिता परलोकम् अगच्छत् एकदा एकस्यां सभायां सः रामकृष्णपरमहंसमहोदयस्य स्पर्शमधिगत्य, समाधिस्थोऽभवत, तस्यैव गुरोः स्पर्शेन च तस्य समाधिः समाप्तोऽभवत्, तस्मात् क्षणादेव नरेन्द्रः तं स्वगुरूम् अमन्यत तपः च आरंभत्। 1893 तमे वर्षे अमरीकादेशे शिकागो नामनगरे विश्वधर्मसम्मेलनभवत्, तस्मिन् सम्मेलन सः भारतस्य प्रतिनिधित्वम् अकरोत् तस्मादेव कालात् तस्य कीर्तिः सर्वत्र, प्रासरत, अनेके जनाः तस्य भक्ताः अभवन् विवेकानन्द लोकसेवायाः उदेश्यं "रामकृंष्णामिशन" संस्थापयत्। 4 जुलाई 1902 तमे वर्षे अयं दिव्यपुरूषः पंचतत्वं गतः ।

"सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः"

नाम – मेघा
कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष
रोल न० – 2947620056

गौः

भारतीयानां श्रद्धाबिन्दुषु गौः एकं महत्वपूर्ण स्थानम् अलङ्करोति । भारतीयाः गाः मातृत्वमेव पश्यन्ति पालयन्ति च । न केवलं दुग्धदातृत्वेन गवां मातृत्वम् बहुविधदिव्य गुणानां निलयः भवति। गौः गवि गव्ये च दिव्यत्वम् अस्ति। तादृशगावः दुग्धदानयन्त्राणि नैव ताः राष्ट्रसौभाग्यदायिन्यः परोपकारगुणेन गोतुल्यजन्तुः नान्य : अस्ति। भूतले वीथीषु अटन्ती लब्धेन तृणेन, पर्णेन अवरकेण वा, मानवेन अनावश्यकम् इति त्यक्तेन पदार्थेन वा स्वोदरं प्रपूर्य परेधवि अमृतसदृशं क्षीरं ददाति गौः। गोक्षीरं ददाति गौः गोक्षीरं तदुत्पन्ननि गोमूत्र गोमयम् – एवं गव्यं सर्वमपि समाजपोषकं भवति। गौ उत्पन्नानी, सम्पद्वृद्धि कराणि। उक्तं च धेनू सदनं रयीणम्। 'गौः सम्पदा निलयः' इति। प्राचीनकाले समाजस्य सुखसम्पदः स्वरं गणयितुं तत्रत्याः गावः प्रमाणम् आसन्। धार्मिककार्य क्रमेषु अन्नदानसन्दर्भे सर्वप्रथमं गवे भोजनं दत्वा – गावो मे मातरः सन्तु पितरः सन्तु गोवृषा गोषु भारतीयगवां स्वभावे किञ्चिद् वैशिष्टयमस्ति।

नाम – पूजा
कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष
रोल न० – 2947620254

मयूरः

मयूरः सर्वेषु पक्षिषु सुन्दरतमः अस्ति।।
तस्य मनोहरः बर्हः भवति। अतः एव
अस्य बही इति नाम। मयूरीणा तु बर्हः
नास्ति। अयं च मयूरः सर्पान् खादति।।
प्रायशः अयम् अरण्ये निवसति।
केचन धनिनः मयूरं विनोदार्थं पोषयन्ति।।
ते मयूरस्य शयनार्थ वलभीषु भित्तेः
उपरितनभागेषु। एकं दारुलफलकं निर्मान्ति।।
अस्य एव 'मयूरयष्टिः इति नाम।
मयूराः वर्षाकाले एवं अधिकं कूजन्ति।
कण्ठरवस्य अस्य स्वरस्थ 'केका' इति
संज्ञा अस्ति। मयूराः मेघगर्जन श्रुत्वा
सन्तोषेण नृत्यन्ति। एषः मयूरः स्कन्दस्थ
(कुमारस्वामिनः षण्मुखस्य) वाहनम्।।
केचन एनं सरस्वत्याः अपि वाहनमीति
कथयन्ति। मयूरस्य केकी, भुजङ्गशुक, शिखी,
नीलकण्ठः इत्यादीनि नामानि सन्ति।
मयूरस्य बर्हे विविधाः वर्णाः सम्भय।।

नाम – श्वेता,
कक्षा – बी. ए. तृतीय वर्ष
रोल – 77

संस्कृत गीतः – भारतं भारतीयं नमामो वयम्

सागरं सागरीय नमामो वयम्
काननं काननीयं नमामोवयम्
पावनं पावनीयं नमामोवयम्
भारतं भारतीयं नमानोवयम्
पर्वते सागरे व समे भूतले
प्रस्तरे व गते पावनं सगमे
भृत्यभूते कृतं सस्मरामो वयम्
पावनं पावनीयं नमामो वयम्
भारतं भारतीयं नमामोवयम्
कोकिला काकली माधव माधवी
पुष्प सम्मानि यौवना वल्लरी
षटपदानासिंह मददं गुन्जनम
पावनं पावनीयं नमामो वयम्
भारतं भारतीयं नमामो वयम्
पूर्णिमा चंद्रिका चित्त सम्बोधिका
भाव संवरधिका चासिता रागात्मिका?
चंयला पावनीयं नमामो वयम्
भारतं भारतीयं नमामो वयम्

नाम – सरिता
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० 353

सुभाषितानि

.चूडोत्तंसितचारुचन्द्रकलिकाचञ्चच्छिखाभास्वरो
लीलादग्धाविलोलकामशलभः श्रेयोदशाग्रेस्फुरन्।
अन्तः स्फूर्जदपारमोहतिमिरप्राग्भार मुच्चाटंयश्चेतः
सद्मनि योगिनां विजयते ज्ञानप्रदीपो हरः।। 2।।

2.बोद्धार मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।
अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्।। 2 ।।

3.न संसारोत्पन्नं चरितमनुपश्यामि कुशलं।
विपाकः पुण्यानां जनयति भयं मे विमृशतः।
महद्भिः पुण्योधैश्चिरपरिगृहीताश्च विषया
महान्तो जायन्ते व्यसनमिव दातुं विषयिणाम्।। 3 ।।

4.भ्रान्तं देशमनेकदुर्गविषमं प्राप्त न किञ्चत्फलं
त्यक्त्वा जातिकुलाभिमानमुचितं सेवा कृता निष्फला।
भुक्तं मानव विवर्जिते परगृहे साशङ्कया काकवत्तृष्णे
दुर्गातिपापकर्मनिरते नाऽद्यापि सन्तुष्यसि।।

नाम – शिवानी यादव
कक्षा – बी. एस सी. द्वितीय वर्ष
रोल न० – 245

आत्मनेपदीया

अपूर्वः कोऽपि कोषोऽयं विधते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायति क्षयमायति संचयात्।
मनोजवं मारुततुल्यवेग
जितेन्द्रियं बुद्धिमता वरिष्ठम्।
वातान्मजं वानरयुथमुख्य
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।
कुसुम वर्णसम्पन्न गन्धहीन न शोभते।
न शेभते क्रियाहीन मधुर वचन तथा
शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पण्डित
वक्ता दषसहस्रेषु दाता भवती
लोमाविष्टो नरो वितृं वीक्षते न तु सङ्कटम्।
दुग्ध परयति मार्जारो न तथा लगुडाहतिम्।

नाम – दीक्षा
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० – 457

"My advice is, never do tomorrow what you can do today. Procrastination is the thief of time."

— Charles Dickens

संस्कृत गीतः सरल भाषा संस्कृतम्

सरलभाषा संस्कृतम्
सरसभाषा संस्कृतम्
सरससरलमनोक्षमङ्गल देवभाषा संस्कृतम्
मधुरभाषा संस्कृतं मृदुलभाषा संस्कृतम्
मृदुलमधुरमनोहरामृत तुल्यभाषा संस्कृतम्।।
अमृतभाषा संस्कृतं वेदभाषा संस्कृतम्।
भेदभावविनाशकं खलु दिव्यभाषा संस्कृतम्।।
अमृतभाषा संस्कृतम् अतुलभाषा संस्कृतम।
सुकृतिजनहदि परिलसित शुभवरदभाषा संस्कृतम्।।
भुवनभाषा संस्कृतं भवनभाषा संस्कृतम्
भरतभुवि परिलसितकाव्य मनोक्षभाषा संस्कृतम्।
शस्त्रभाषा संस्कृतम् शास्त्रभाषा संस्कृतम्
शस्त्रशास्त्र भृदार्ष भारतराष्ट्रभाषा संस्कृतम्।।
धर्मभाषा संस्कृतं कर्मभाषा संस्कृतम्
धर्मकर्मप्रचोदकं खलु विश्वभाषा संस्कृतम्।।
जयतु संस्कृतं जयतु भारतम् ।।

नाम – आचूकी शर्मा
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० – 359

विश्वशांतिः

विश्वस्मिन् विश्वे न केवलं मनुष्याः अपितु सर्वे प्राणिनः शान्ति काम्यन्ते। कोऽपि दुखं कष्टं वा नैव वाञ्छति। अनेन स्पष्टं प्रवांछतीयते यद् विश्वशांति भावना प्राणिषु स्वभाविकी वर्तते। सर्वेषु एव धर्म ग्रन्थेषु विश्वशान्ति ध्वनिः श्रूयते। वेदाः भणन्ति मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे, मा गृधः कस्य स्विद्धनम् सर्वेषामीश्वर प्रार्थनाय विश्वशान्ति कामना प्राप्यते। भारतीयाः प्राचीनकाल एवं स्वदैविक प्रार्थनासु मनुस्मृतेः इदं पदं पठन्ति "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।" भारते प्राचीनकालादेव यज्ञाः विश्व कल्याणाय अविधीयन्त, विश्वमूर्तेः परमात्मनः उपासनमेव यज्ञस्य वास्तविकः विद्यते अथवा अखिलम् विश्वम् परमेश्वरस्य साकारं रूपं मत्वा तस्य मनसा वाचा कर्मणा सेवा एवं यज्ञः। सः एवं यज्ञः विश्वशान्तेः प्रमुखः उपायः। भारतस्य सर्वे दार्शनिकाः विश्वशान्त्यर्थ प्रयतमानाः दृश्यन्ते। यथा भगवतः बुद्धस्य वाणी विश्वशान्ति भावपूता प्राणिनां शान्त्यर्थं प्रवृत्ता सती दृश्यते तीर्थकराणां जैन–मुनीनां सर्वे उद्योगः एतदर्थमेव सम्भूताः, एवं सत्यमपि विश्व–शान्तिरेवः नैव अनुश्रूयते। विश्वशान्ति वातावरणं नैव दृष्टं भवति। सर्वत्र पिता पुत्र, पुत्रस्य पितरं भक्षयति पीडनं, क्रन्दन मारणमग्निदाहः स्त्री बाल हत्यादिकम्, बलात्कारः श्रूयन्ते अहर्निशं दृश्यन्ते च समाचार पत्रेषु प्रायशः अवलोकयन्ते। इत्थमत्र संसारे विग्रहस्य वातावरणं प्रबलमास्ते। एकःदेशः स्व समृद्धयर्थम् अपरं देशं नष्टं विदधाति सः इमं धर्मं मन्यते। तथा सः मनुष्य विनाशाय घातकानि अस्त्राणि निर्मिमते प्रयूङ्कते च। अणुबम्ब, हाइड्रोजन बम्ब अविष्कारैः एवं विधैः विश्वस्य वातावरणं संकटग्रस्तं, शान्तिमयं, अतएव अन्यानि राष्ट्राणि शान्त्यर्थं तृषितनैः भारत प्रति अवलोकयन्ते।

अतः मनुष्यतया रक्षायै भारतीया मनुष्यैः गम्भीर तथा चिन्तनीयम्।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

नाम – भाविका
कक्षा – बी. एससी. तृतीय वर्ष
रोल न० – 171

अनुशासनम्

अनुशासनस्य अस्माकं जीवने अति महत्वं अस्ति। अनुशासनम् शब्द 'अनु' उपसर्गपूर्वक 'शासनम् शब्देन निर्मितं अस्ति। अस्य अर्थमस्ति–शासनस्य अनुसरणम्। अतः नियमानां पालनं नियन्त्रणं स्वीकरणं वा अनुशासनम् कथ्यते। जीवनस्य प्रत्येकस्मिन् क्षेत्र कतिपयानां नियमानां पालनं आवश्यक वर्तते। प्रातः शीघ्रं जागरणं नियमितव्यायामः, नियमेन स्वकार्य करुणं, कार्य प्रति पूर्णसमर्पणं अनुशासित जीवनस्य अंगनानि सन्ति। प्रकृत्याः नियमाः शाश्वताश्च ध्रुवा सन्ति। पृथ्वी, ग्रहाः नक्षत्रः सूर्यः, चन्द्रः आदयः च सर्वे अनुशासने बद्धाः सन्ति। शरीरस्य आरोग्याय यथा संतुलितं भोजनं अपेक्षते तथैव राष्ट्रस्य समाजस्य च उत्थानाय अनुशासनं अपेक्षते। छात्राणाम् कृते अनुशासनम् बहुमहत्वं अस्ति। यदि छात्राः ध्यानेन पठन्ति तर्हि भविष्ये जीवनस्य प्रत्येकस्मिन् क्षेत्रे साफल्यं प्राप्तुवन्ति।

नाम – नीशू
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० – 2293

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म :।
ते मर्त्यलोक भुवि भारभूता मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति ।।

अर्थात :– जिन पुरूषों में न दान देने की प्रवृत्ति है, न विद्या है, न तप है, न शीलता है और न कोई अन्य गुण है। वे मनुष्य पृथ्वी पर भार स्वरूप हैं और मृग रूपी पशु की भांति इस पृथ्वी पर विचरते हैं।

भर्तृहरि

ईशस्तवः

नित्योऽनित्यानां चेतनोऽचेतनानाम्।
एको बहुनां यो विदधाति कामान्।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा –
एतेषा शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम्।।
यो देवो अग्नौ यो अप्सु यो विश्वं भुवनमाविवेश।
यो औषधीयु यो वनस्पतिषु तस्मै देवाय नमो नमः।।
बलमस्ति बलं मयि धेहि ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि।।
अभयं मित्रादभयममित्राद,
अभयं ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।
मधुमन्मे निष्क्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसदृशः।।

नाम – नेहा
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० 467

एकता

मतभेदस्य विरोधस्य व अभावः एकता इति उच्यते! एकतायाः अपरं नाम" ऐक्यं सङ्घटन" वा इत्यापि वर्तते। मनुष्याणां सांसारिक जीवनस्य कृते एकता महान् लाभकारी गुणः अस्ति। यदि संसारे मनुष्यकेषु एकता न स्यात् तर्हि तेषां एक दिनस्यापि जीवनं कठिनं सम्पद्येत् एकतायां महती शक्तिः भवति। यत् कार्यं एकेन तं कर्तुं शक्यते तद् बहूनां सम्मिलितेन समुदायेन सुगम तथा एवं भवति। वर्तमान समये एकतायाः महान् अभावः अस्ति। परिवारे समाजे देशे तथा सम्पूर्ण संसारे सर्वत्रैव अनेकतायाः मतभेदस्य च भयङ्करः झंझावत् प्रवाहमानः दृश्यते। एतस्य प्रधानं कारणं तु स्वार्थपरता एव अस्ति। सर्वे स्वकीयमेव हितं पश्यन्ति। न अन्योषम् अतः एकतायाः स्थापनाय परस्परं स्नेह–सौहार्द वार्धनाय च स्वार्थ साधनेन सहैव परेषामपि स्वार्थ – रक्षणाय उपरि ध्यानदानं परमावश्यकं वर्तते!

नाम – मुस्कान
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० – 561

हम मानसिक रूप से दोगले नहीं तिगले है। संस्कारों से सामन्तवादी हैं, जीवन मूल्य अर्द्ध–पूँजीवादी हैं और बातें समाजवाद की करते हैं।

हरिशंकर परसाई

विद्या

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियानिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।
अभिवादनशीलस्य नित्यं, वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।
बालस्तावत् क्रीडासक्त तरुणस्तावत् तरुण्यासक्तः।
वृद्धस्तच्चिन्तासक्त परं ब्रह्मणि कोऽपिनासक्तः।।
नलिनीदलगतजलमतितरलम्, तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं, लोक शोकहत च समस्तम्।।
लोभ मुलानि पापानि संकटनिसंग तथैव च।
लोभाप्रवर्तते वैरं अतिलोभात्विनश्यति।।
मा कुरु धनजनयौवनगर्व, हरति निमेषात्कालः सर्व।
मायामयमिदमखिलम् हित्वा, ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा
योगरतो वा भोगरतो वा, सङ्गरतो वा सङ्गविहीनः।
यस्य ब्रह्माणि रमते चित्तं, नन्दति नन्दति नन्दत्येव।।
विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषुः च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च।।

नाम – मोनिका
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० 548

विद्यामहिमा

ज्ञानार्थक विद्धातोः विद्याशब्दः सिद्धयति। यस्य कस्यचिदपि वस्तुनः सम्यक् तथा ज्ञानं विद्येति कथ्यते। वेददर्शन साहित्यविज्ञानादीनां विषयाणां पठनं सम्यक् ज्ञानं च विद्येति अभिधीयते। यद्यपि संसारे बहुनि वस्तुनि सन्ति परन्तु विधैव सर्वश्रेष्ठ धनमस्ति। अत एवोच्चयतेविद्यां धनं सर्वधानप्रधानम्। विद्या मनुष्यः स्वकीय कर्त्तव्यं जानाति विद्यायैव मनुष्यो जानाति यत् अकर्त्तव्यम् किम् पुण्यम्, किम् पापम्, किम् कृत्वा लाभो भविष्यति। केन कार्येण वा हानिः भविष्यति। स विद्या प्राप्त्या सन्मार्गम् अनुवर्तितुम प्रयतते। एव विद्ययैव मनुष्यो मनुष्योऽस्ति। यो मनुष्यो विद्याविहीनोऽस्ति स कर्त्तव्यस्याकर्त्तव्यस्य अज्ञानात् पशुवद् आचरति, अतः स पशुरित्याभिधीयते, विद्याविहीनः पशुः इति–

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रछन्नगुप्तं धनं।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरू
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता।
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः।।
न चोरहार्यं न च भ्रातृ भाज्यं, न राजाजहार्यं न च भारकरि।
व्ययकृते वर्धते एवं नित्यं, विद्या धनं सर्वधनप्रधानम्।।

नाम – मधु
कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष
रोल न० – 521

"आचार्य देवो भवः"

सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्

किम् अस्ति तत् पदम
यः लभते इह सम्मानम्
किम् अस्ति तत् पदम
यः करोति देशानाम् निर्माणम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यम् कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्
किम् अस्ति तत् पदम
यस्य छायायाः प्राप्तम् ज्ञानम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यः रचयति चरित्र जनानाम्
'गुरु, अस्ति अस्य पदस्य नाम
सर्वेषाम् गुरुणाम मम शतं शतं प्रणामः।।

नाम – पूजा रस्तौगी
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० – 512

"माता"

अस्मिन् संसारे माता एव परम दैवतमस्ति मातुः स्थानं गृहणा तु कोऽसि न समर्थः। सर्वोत्कृष्ट स्थानं मातृरेव सा तु स्वर्गादपि गरीयसी वर्तते। मातरधिक किमपि पूज्य नास्ति। वेदेषु पुराणग्रंथेषु अपि मातुः महात्मय वर्णितम्। पितुः आचार्यदीप माता श्रेष्ठा अस्ति। अतः सर्वप्रथमो अयमुद्देशः 'मातृदेवो भव, इति। पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव इत्यादिकाः उपदेशाः पश्चादागच्छन्ति सन्ततिपालने माता किं किं न करोति सा अनेकानि कष्टानि सहते शैशवे पुत्रस्य कारणे रात्रौ अपि जागरणं करोति। स्वयं दुःखं सहवे, किन्तु पुत्राय सर्वं खुश यच्छति माता अतीव पुत्रवत्सला अस्ति सा एव बालकस्य प्रथमः गुरुः अपि भवति। विद्यालयगमनात् प्रागेव सा बालकं स्नेहेन शिक्षयति महाभारते महर्षिणा व्यासेनादि उक्तं 'नास्ति मातृसमा गुरूः। स्नेहपरायणा, साधुस्वभावा माता बहुनापि मूल्येन लब्धुं न शक्यते 'दीवार' नाम हिन्दी चित्रपटे अपि मातृः महत्वं दर्शितम् तत्र अयं संवादः लोकप्रियः अभवत् मम् समीपे धनमस्ति, वाहनमस्ति गृहमस्ति त्वत् समीपे किमस्ति? तदा नायकः वदति, 'मम समीपे माता अस्ति।

नाम – पूजा रस्तौगी
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष
रोल न० – 512

गङ्गा नदी

यथा पर्वतेषु हिमालयः श्रेष्ठा सर्वासु नदीसु गङ्गा नदी श्रेष्ठाः वर्तते। इयमस्माकं पवित्रतमा, परमपूज्या च नदी। गंगानदी 'सुरनदी' अपि कथ्यते। सुराणां–देवानां नदी सा सुरनदी अस्याः महिमा देवैः अपि मन्यते। भागीरथी, जाह्नवी, मंदाकिनी इत्यादिभिः नामाभिः अपि सा कथ्यते। भगीरथेन राज्ञा सगरपुत्राणाम् उद्धाराय गंगा पृथ्वीतले आनीता तस्मात् कालात् सा "भागीरथी' इति नाम्ना विख्याता। गंगानदी हिमालस्य 'गंगोत्री' नाम स्थानात् निर्गत्य, वेगेन वहन्ती गंगासागर प्रविशति। गंगाया तटे अनेकानि नगराणि सन्ति। तेषु हरिद्वार, प्रयागः वाराणसी, पाटलीपुत्रं च मुख्यरूपेण वर्तन्ते। प्रतिवर्ष सहस्र जनाः गंगास्नानं कर्तुं हरिद्वार गच्छन्ति। हरिद्वारे गंगायाः जलं स्वच्छमस्ति। तेषा शोभा अतीव आकर्षका वर्तते। कार्तिकमास पूर्णिमायाः अवसरे अपि श्रद्धावन्तः जनाः गंगास्नानम् अवश्यं कुर्वन्ति। गंगानदी भारतीयानां जनजीवनं अस्ति। गंगा स्नाने पापात् मुक्तिर्भवति। इति हिन्दुनाम् अटलः विश्वासः अस्याः जलं पवित्रं, निर्मल निर्दोषं च अस्ति। गंगा नदी न केवलं भारतीयैः पूजनीया अपितु पाश्चात्यैः अपि अस्याः प्रशंसा कृता, यतः गंगाजलस्य वैज्ञानिके, परीक्षा कृता तज्जलमतीव शुद्धं, निर्विकारम इति सिद्धम्। आधुनिक काले अपि गंगायाः नवीनः उपयोगः कृतः। अस्याः जले विद्युत समुत्पादिता। अनया विद्युता अनेकेषु नगरेषु प्रकाशः समायातः। अतएव गंगायाः महत्वम् अवर्णनीयम्। अस्याः प्रशंसायाम् अनेकानि स्तोत्राणि रचितानि। गंगास्नानस्य महात्म्यपि वर्णितम्। गंगोच्चारणेनापि पापक्षालनं भवति इति मन्यते। अतः उक्तम् –'गंगा गगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपिमुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।

नाम – सोनिका
कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष
रोल न० – 348

पत्रिका संबंधी विवरण

संरक्षक : डॉ० रमेश कुमार गर्ग, प्राचार्य

प्रकाशक : राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर–14, गुरूग्राम – 122001 (हरियाणा)

मुद्रक : ए० आर० आर० ग्राफिक्स, एम० जी० रोड सुखराली गुरुग्राम.

मुद्रण–अवधि : वार्षिक

स्वत्वाधिकार : राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर–14, गुरुग्राम.

नोटः

1. प्रकाशित रचनाओं के विचारों से समपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. सभी पद अवैतनिक हैं।
3. पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल गुरुग्राम न्यायालय के अधीन होंगे।

महाविद्यालय स्तर पर मेधावी छात्राओं की सूची सत्र (2020–2021)

Sr No.	NAME	COURSE	ROLL NO..	MARKS OBTAINED
1	MANISHA	BA PASS COURSE	7659046	1950/2400
2	MONIKA	BA PASS COURSE	7659070	1930/2400
3	YOGITA	BA PASS COURSE	7659349	1861/2400
4	RAM BHATERI	ECO. (HONS)	7613063	2238/3000
5	SHIKHA KAUSHIK	GEOGRAPHY (HONS)	7613776	1830/2200
6	RASHMI	BSC ZOOLOGY (HONS)	7654191	1794/2200
7	BIPASHA GAUTAM	BSC ZOOLOGY (HONS)	7654168	1757/2200
8	VARSHA	BSC ZOOLOGY (HONS)	7654206	1742/2200
9	RENUKA	BSC (MEDICAL)	7641149	2556/2900
10	POOJA BADIWAL	BSC BOTANY (HONS)	7654030	1902/2200
11	PALLAVI SHARMA	BSC BOTANY (HONS)	7654027	1895/2200
12	SIMRAN SEHRAWAT	MA GEOGRAPHY	8344850	1765/2150
13	PREETI DEVI	MA GEOGRAPHY	8344843	1756/2150
14	PRIYANKA CHAUDHARY	MA GEOGRAPHY	8344846	1684/2150
15	MEGHA	MA ENGLISH	8342861	1429/2250
16	NISHA RANA	MSC COMPUTER SCIENCE	9375969	1816/2250
17	ANJU SEHRAWAT	MSC COMPUTER SCIENCE	9375954	1736/2250